साप्ताहिक भविष्य

३ मई से ९ मई, १९७९ तक,
पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : झगड़े आदि से परेशानी, काम भी बनते बिगड़ते रहेंगे, वातावरण सुधरेगा, लाभ के चांस प्राप्त होंगे, प्रयासों में सफलता मिले, अच्छे लोगों की संगति रहेगी, परिश्रम अधिक-लाभ देर से मिलेगा।

वृष : काम धन्धों और रोजगार में उन्नति, लाभ समय पर मिलता रहेगा, कारोबार मध्यम, मित्रों, बन्धुजनों से मन-मुटाव, यात्रा न करें, हालात सुधरेंगे, भाग्य सहारा देगा, कामकाज में उन्नति होगी।

मिथुन : काम रुक-रुक बनेंगे, लाभ भी देर से मिलेगा, कामों में व्यस्तता बढ़ेगी, लाभ यथार्थ, व्यय अधिक, कारोबार ठीक चलेगा, परिश्रम सफल रहेगा, घरेलू झंझटों से चिन्ता, कामों में सुधार, लाभ बढ़ेगा।

कर्क : कुछेक परेशानियों के बावजूद भी हालात नियंत्रण में ही रहेंगे, लाभ व्यय समान, नए काम की योजना पर विचार, काम बनते रहेंगे, धार्मिक कामों पर व्यय, परिश्रम करने पर सफलता आशा से कम।

सिंह : बनते कामों में रुकावट, स्थायी कामों में सुधार, आय में वृद्धि, किसी प्रियजन से मिलाप, शत्रुओं को मुंह की खानी पड़ेगी, कामकाज सामान्य, मुकदमे आदि में सफलता, लाभ अच्छा परन्तु व्यय भी कम न होगा।

कन्या : घरेलू योजनाओं पर विचार-विमर्श, यात्रा की आशा है, स्वभाव में गुस्सा, जल्दबाजी से काम लेना ठीक नहीं, यात्रा छोड़ दें तो अच्छा, परिश्रम अधिक-सफलता भी मिलती रहेगी, साहस शक्ति बढ़ेगी।

तुला : कारोबार ठीक चलेगा, सुख सुविधाओं पर व्यय, स्त्री पक्ष से घर में चिन्ता, अन्य हालात ठीक चलेंगे, शत्रु मुंह की खायेंगे, लाभ बढ़ेगा, व्यर्थ के झंझटों से चित में घबराहट, यात्रा न करें, लाभ भी बढ़ेगा।

वृश्चिक : मिश्रितफल मिलते रहेंगे, लाभ देर से मिलेगा, व्यापार को बढ़ाने के लिए धन व्यय करना पड़ेगा, लाभ भी अच्छा होने लगेगा, यात्रा में सुख, शुभ कामों में रुचि, आर्थिक लाभ होता रहेगा।

धनु : यात्रा छोड़ दें, बनते कामों में बाधा उत्पन्न होगी, लाभ बढ़ेगा, काम भी समय पर बनते रहेंगे, कारोबार में सुधार, राजकीय कामों में विजय, धार्मिक कामों पर व्यय, भाग्य सहारा देगा, लाभ बढ़ेगा।

मकर : साहस शक्ति दृढ़, मिश्रितफल मिलेंगे, दिन अनुकूल नहीं, नए कामों के चक्कर में न पड़ें, हानि का भय है, यात्रा में चोट या हानि, शुभफलों में वृद्धि, बिगड़े काम बनेंगे, बड़े लोगों को सहयोग मिलेगा।

कुम्भ : लाभ अच्छा, रुके काम बन जायेंगे, कारोबार में दृढ़ता आएगी, धार्मिक कामों में रुचि, सुख साधनों पर व्यय, नई वस्तुओं की खरीद करेंगे, रुकावटों का सामना होगा, रोजगार में सुधार, हालात ठीक चलेंगे।

मीन : संघर्ष काफी होगा, काम बनते रहेंगे, यात्रा सफल, वातावरण अनुकूल रहेगा, कार्यों में सफलता पायेंगे, भाग्य साथ देगा, नए धन्धे की योजना पर विचार, आशा की किरण चमकेगी, परेशानी अधिक रहेगी।

आपके पत्र

'दीवाना' में पता नहीं कौन सा जादू है, जो मैं इसके बगैर रह ही नहीं सकता। अब तो 'दीवाना' हमें समय से दो-चार दिन पूर्व ही मिल जाता है। दीवाना का चटपटा अंक १२ मिला। पढ़कर मन बाग-बाग हो गया। विशेषकर मुझे चिल्ली लीला, फिल्मी डायलाग और दीवाने का जवाब, मोटू-पतलू, परोपकारी, पत्नी, माई बाप, ईमानदारी, कल क्या होगा ? चना कुरमुरा, सवाल यह है ? तथा कहानियां ठोकर, तलाश एवं उस्तादी के चक्कर में, काफी रोचक लगे। कृपया वर्ग पहेली बन्द कर दें क्योंकि यह समझ में नहीं आती है। **सत्यपाल बधावन—करतारपुर**

दीवाना का नया अंक १२ बहुत दिनों के बाद ठीक समय पर मिला। पढ़कर दिल खुशी से बाग-बाग हो गया। मुख पृष्ठ बड़ा ही रोचक लगा। चिल्ली लीला, परोपकारी बन्द करो बकवास तथा पंचतंत्र भी काफी अच्छे लगे। सम्पादक जी कृपया काका के कारतूस "स्तम्भ" को देने की कृपा करें। क्या मैं दीवाना आपके यहां से प्राप्त कर सकता हूं। **कृष्णदेव पाण्डेय—दानापुर**

दीवाना एक मनोरंजक पत्रिका है मगर कभी कभी ये तड़पाती भी बहुत है। अंक ५ से लेकर अंक १० तक नहीं आया बताइये मैं कितने रुपए भेज दूं इन अंकों के लिए दीवाना की जितनी तारीफ की जाये कम है। एक से बढ़कर एक स्तम्भ होते हैं जो भूले नहीं भूलते। अच्छी सामग्री के अलावा मुझे कई वफादार दोस्त भी मिले हैं जैसे कमल जैन, शहावंशम्सी, रमेश शर्मा आदि। बहरहाल दीवाना एक नाकाबिले फरामोश पत्रिका है। कृपया भीमपलासी व मथुरावासी के दर्शन कराइये। छुट्टन, मिट्टन क्या विदेश चले गए हैं? चाचा बातूनी अब अच्छा आ रहा है।

हमारे शौक का मौसम सदाबहार रहे
"दीवाना" जग के लिए एक यादगार रहे
खान निसार वारसी—शाहजहांपुर

'दीवाना' अंक बारह जो मैंने पढ़ा,
हंसने का भूत मेरे सिर पर चढ़ा।
पढ़ा जो हंगामा भाई 'सिलबिल' का,
हंसकर बुरा हुआ हाल मेरे दिल का।
देखी जो घसीटाराम की मुसीबत,
रोते-रोते हो गई मेरी बुरी गत।
"कल क्या-क्या होगा" पढ़ा जो मैंने,
कुछ और भी हो सकता है सोचा मैंने।
जैसे कि फोन पर चेहरा भी दिखेगा
आवाज के साथ,
गाने के बोल भी निकलेंगे,
संगीत-वाद्यों से, धुन के साथ।
योगेशकुमार अग्रवाल—टीमापुर

दीवाना अंक १३ मिला तो मारे खुशी के झूम उठा और लगा एक ही सांस में पढ़ने। उधर से हंसी का एटमबम, सामने दूसरी ओर पढ़ने की उत्सुकता बीच में मेरा हंसते-हंसते बुरा हाल।

आजकल वैसे दीवाना में बहुत सुधार हुआ है परन्तु क्रिकेट खिलाड़ियों के बारे में बहुत कम मसाला छ पा है।

काका जी के कारतूस, आपस की बातें लेखिका संगीता द्वारा लिखी गई कहानी बहुत अच्छी लगी।
ओमप्रकाश सहगल—फरीदाबाद

मुख्य पृष्ठ पर

रागी बन राग कर
या त्यागी बन त्याग
फिर भी उतना ही मिले
जितना जिसका भाग
जितना जिसका भाग,
देखिए एक नमूना
चेला है फिर भी
रहे मुंह कभी न सूना।

अंक : १५, ३ मई से ९ मई १९७९ तक
वर्ष : १५

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

छमाहीः २५ रु०
द्विवार्षिकः ९५

काका के कारतूस

प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के



तेज प्रसाद जे० सी० श्रेष्ठ, दुलियाजान(असम)

प्र० : लड़कियां जब आपस में लड़ती हैं तो एक दूसरे की चोटी खींचने लगती हैं, इसका लड़कों पर क्या प्रभाव होता है ?

उ० : लड़कियों के लड़ने की आदत है खोटी ।
इसलिए लड़के नहीं रखते हैं चोटी ॥

श्याम सुन्दर माहेश्वरी, 'अशोक', फारबिस गंज

प्र० : काकाजी, सुना है लड़कपन में कभी आपने कोयला घिसकर अपने मुखड़े पर मला था ?

उ० : काली लड़की छेड़ती, करती हमको तंग ।
उससे बचने के लिए, बदला मुंह का रंग ॥

कृष्ण कुमार गुप्ता, मुजफ्फर पुर (बिहार)

प्र० : आजकल के लड़के और लड़कियों में फर्क क्यों नहीं मालूम होता है ?

उ० : लड़की बाल कटा रहीं, न्यू फैशन की चाल ।
लड़के ब्लाउज पहनते, रखते लम्बे बाल ॥

ऋषिकांत चतुर्वेदी, हरदोई

प्र० : काका जी यह बात अब हमको देउ बताय ।
यू० पी० वाली मिनिस्ट्री, कितने दिन जम पाय ॥

उ० : नियम देखकर प्रकृति का, यह अंदाज लगाय ।
जाड़ों में जो जम गया, गर्मी में घुल जाय ॥

एम० एच० कादरी, दिलकश, बीकानेर

प्र० : कुछ लड़कियां ऊंची ऐड़ी के सेंडिल पहन साड़ी नीची लटकाकर फोटो क्यों खिचवाती हैं ?

उ० : छोटे कद की लड़कियां, अपनातीं यह राह ।
लम्बे कद के युवक से, तय हो जाय विवाह ॥

गनेश कुमार मित्तल, गाजियाबाद

प्र० : इंसान के लिए मनोरंजन आवश्यक है क्या ?

उ० : बिना मनोरंजन किए चेहरा बने विचित्र ।
'दीवाना' को इसलिए पढ़ते हैं सब मित्र ॥

विक्की जेम्स, मजगवाँ, (पन्ना) म० प्र०

प्र० : क्या आप काकी को भी कभी अपनी कविताएँ सुनाते हैं ?

उ० : झुंझलाहट के चक्र में जब काकी फँस जाय ।
तब हम अपनी फुलझड़ी छोड़े वह हंस जाय ॥

हरीशचन्द्र 'सुन्दर' बुढ़ार, (शहडोल)

प्र० : काका जी, सुना है कि आप हास्य से सन्यास ले रहे हैं, क्या यह सच है ?

उ० : मुरारजी की आयु है, अब चौरासी वर्ष ।
वे नहिं गद्दी छोड़ते, हम क्यों छोड़ें हर्ष ॥

भुपेन्द्र देवगुन, अंधा मुगल, दिल्ली

प्र० : आपने इस पृष्ठ के शीर्षक 'काका के कारतूस' में चार 'क' क्यों लगा रखे हैं ?

उ० : जे० पी०, जत्ती, राज हैं, जनता और जनसंघ
चार हमारे, पाँच वह, फिर क्यों दंगम दंग

देशपाल सोनी, मुक्तसर (पंजाब)

प्र० : इतना चटपटा हास्य आप कौन-सी दवा खा[illegible] हैं काका ।

उ० : मौंठ, पापड़ी, पकौड़ी, दहीबड़े की चाट ।
काकी हमको खिलाती, हास्य रहे हम बाँट ॥

जग्गी दुआ, करनाल (लुधियाना)

प्र० : आप हनीमून मनाने कहाँ गये थे काका ?

उ० : खिली 'मून' की चाँदनी, गये छत्त पर लेट ।
'हनी' साथ में ले गए, स्वाद मिला भर पेट ॥

कुरबान हवारी 'मस्ताना', गहवावीर गंज (नेपाल)

प्र० : प्रश्नों के उत्तर देने में आप इतनी देर क्यों लगा[illegible]

उ० : दीवानों के प्रश्न तो आते कई हजार ।
छपते पन्द्रह बीस ही, क्या है दोष हमार ॥

मनिंदर पाल कौर, राजेन्द्रनगर, गाजियाबाद

प्र० : 'दीवाना' पढ़ते-पढ़ते मेरा भाई दीवाना बन गया[illegible] करूं ?

उ० : परेशान हैं आप क्यों, भाई बने महान ।
दीवाना से राज्य का, हो जाए दीवान ॥

मदन किशोर, होतवानी, रायपुर (म० प्र०)

प्र० : आम को खाकर गुठली को क्यों फेंक देते हैं ?

उ० : दबा दबाकर आम को चूस लीजिए आप ।
फिर गुठली को भूनकर चबा जाऊ चुपचाप ॥

बिजय कुमार रुद्रपुर, (नैनीताल)

प्र० : आप हास्य के कारतूस छोड़ने को बंदूक कहाँ से[illegible]

उ० : हास्य व्यंग्य के काव्य से, भरी रहे संदूक ।
कारतूस हम पर रहें, काकी पर बन्दूक ।

मनोहरलाल बतरा, छुटमलपुर (सहारनपुर)

प्र० : दिन के बाद रात, तो मुहब्बत के बाद ?

उ० : जिद दोनों की अड़ गई, और पड़ गई फूट ।
तू-तू मैं-मैं बढ़ गई, गई मुहब्बत छूट ॥

श्याम माहेश्वरी, अशोक, पूर्णियाँ

प्र० : भगवान इन्सान से और इन्सान किस्मत से तो किस्मत ?

उ० : लगा दिया भगवान ने, माया का जंजाल ।
किस्मत खेले कर्म से, फल मिलता तत्काल ॥

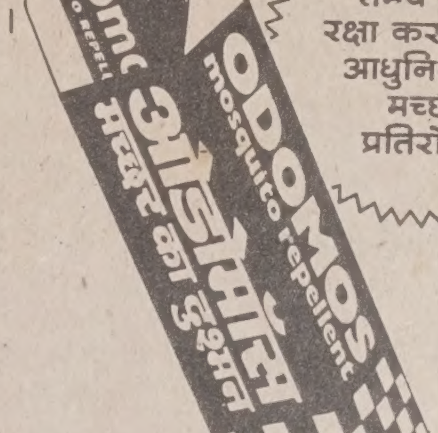
अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

काका के कारतू[स]
दीवाना साप्ताहिक[illegible]
८-बी, बहादुरशाह जफ[र][illegible]
नई दिल्ली-११०००[illegible]



मच्छर भाग जाये... मीठी नींद आये

ओडोमॉस का आवरण मच्छरों को पास फटकने नहीं देता, इसलिए आप रातभर चैन से मीठी नींद का मज़ा ले सकते हैं। ओडोमॉस आपकी त्वचा के लिए भी सुरक्षित है।



अधिक समय तक रक्षा करनेवाला आधुनिकतम मच्छर प्रतिरोधक

मच्छरों का दुश्मन — बलसारा का

ओडोमॉस

बलसारा
—सुखी जीवन के लिए आधुनिक साधन

BALSARA बलसारा एण्ड कं. (प्रा.) लि.
४३, नगिनदास मास्तर रोड, बंबई ४०० ००१.

CHAITRA-BLS-243 HIN

अब १०० ग्राम के इकॉनमि पैकिट में भी उपलब्ध।

हो हो हो

● प्र०—हाथियों की १६ टांगें कब होती हैं ?

उ०—जब चार हाथी एक जगह हों ।

● एक बार टैक्स विभाग ने प्रस्ताव रखा कि सौन्दर्य प्रसाधन की सामग्री यानि कॉस्मेटिक्स पर भी वही कर लगना चाहिए जो जानवर पकड़ने के समान जैसे फन्दे और जाल आदि पर लगता है । मंत्री ने इसका कारण पूछा तो अन्डर सेक्रेटरी ने स्पष्टीकरण दिया, 'सर, रुज, लिपस्टिक-पाउडर और क्रीम वगैरह की मदद से औरतें बीता समय पकड़ने की कोशिश करती हैं ।'

● एक बार एक आदमी हांफता हुआ रेलवे टिकट खिड़की पर पहुंचा और बोला, 'मुझे सबसे तेज गाड़ी का, वह जहाँ तक जाती है,का टिकट दीजिए ।'

काउंटर क्लर्क ने कहा, 'लेकिन जनाब हमारी सबसे तेज गाड़ी सुपर फास्ट एक्सप्रैस तो अभी-अभी निकल गयी ।'

उस आदमी ने गहरी सांस ली, 'तो फिर मुझे टिकट पकड़ा दो और रेल लायन दिखाओ । मैं उस पर पैदल ही दौड़ूंगा । मेरे पीछे पठान पड़ा है जिससे मैंने कर्ज लिया था ।'

● एक नेता पागल खाने गये । वहाँ एक सुन्दर युवती भी थी । उस युवती पर कभी-कभी पागलपन का दौरा पड़ता था । उन दिनों वह ठीक थी । उसी ने नेता जी को पागल खाने में घुमाया । अन्त में वह नेताजी से बोली, 'आप यहाँ नये भर्ती होकर आये हैं ?'

नेता जी मुस्कराये, 'मैं पागल नहीं हूं । मैं तो नेता हूं ।'

युवती ने संजीदगी से कहा, 'मैं तो आपको देखते ही जान गयी थी कि या तो आप पागल हैं या नेता । तय नहीं कर पा रही थी कि आप कौन से होंगे ।'

● दो मित्र पार्क में गये—एक बेंच खाली देख उस पर बैठते हुए एक ने कहा, 'आओ आज यहीं जम कर बैठ जायें ।' दूसरा जो चरस का शौकीन था बोला, 'यार आज अपने पास मसाला बिल्कुल खतम है । जम कर कैसे बैठेंगे ?'

पीछे से चौकीदार की आवाज आई, 'साहब, बस बैठे रहिये अपने आप जम जाओगे । बेंच का पेन्ट गीला है ।'

● प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंसटीन एक बार प्रिंसटन यूनिवर्सिटी के मेहमान बने । दूसरे दिन डीन के दफ्तर में एक फोन आया, 'क्या आप मुझे डाक्टर आइंसटीन के घर का पता बता सकते हैं ?' आइंसटीन के घर का पता गुप्त रखा जाता था ताकि फालतू लोग जाकर उन्हें परेशान न करें । डीन ने पता बताने से इन्कार किया तो फोन पर आवाज आई फुसफुसाहट में, 'शSSSS ! कृपया किसी को बताना मत । मैं ही डाक्टर आइंस्टीन हूं । घर के लिए चला था। लेकिन अपने घर का पता भूल गया हूं ।'

● पुत्र ने पिता से कहा, 'पिताजी, मैं जा रहा हूं । दुनिया की सैर करना चाहता हूं । खूब पैसा कमाना और ऐश करना चाहता हूं । मेरा इरादा पक्का है । मुझे रोकने की कोशिश मत करना ।'

पिता बोला, 'बेवकूफ तुझे रोक कौन रहा है ? मुझे भी साथ ले चल ।'

● एक टूरिस्ट घूमता-घूमता एक छोटे से कस्बे में पहुंचा । उसने एक छोटे से ढाबे में तीन उबले अण्डे मंगाये।खाने पर बिल देखा तो पंद्रह रुपये । एक अण्डे का पाँच रुपया लगाया गया था ।

टूरिस्ट ने पूछा, 'क्या यहां अण्डों की इतनी कमी है ?'

होटल वाला,—'नहीं साहब, अण्डों की कमी नहीं है । हाँ टूरिस्टों की जरूर सख्त कमी है ।'

● एक कैदी दूसरे से, तुम जेल से छूटने के बाद क्या करोगे ?'

दूसरा, 'मैं जेवरों की दुकान खोलूंगा ।

पहला, 'मगर जेवरों की दुकान खोलने लायक पैसा है तुम्हारे पास ?'

दूसरा, 'नहीं, पैसा तो नहीं है लेकिन ताले खोलने के सारे औजार मेरे एक दोस्त के घर रखे हैं ।'

● एक व्यक्ति घूमने बम्बई गया । वहां हर चीज के ऊंचे दाम उसे देने पड़े । महंगे होटल में ठहरा, वहां तो दाम और भी ऊंचे थे । काउंटर के पीछे बैठी लड़की के गले के हार की तरफ इशारा कर उसने लड़की से पूछा, 'माफ कीजिये, आपने जो गले में पहन रखा है वह क्या चीज है ?' लड़की बोली, 'यह हार है ! यह प्रश्न आप क्यों पूछ रहे हैं ?'

वह व्यक्ति लम्बी सांस छोड़कर बोला, 'यहां की हर चीज ऊंची है । मैं सोच रहा था यह शायद आपके पैरों के पाजेब होंगे !'

● एक बार एक बहुत नामी टैस्ट बैटसमैन एक छोटे कस्बे में पहुंचा । वहां के खेल प्रेमी बहुत खुश हुये । मौके का फायदा उठाने के ख्याल से वहां के छोटे-मोटे खिलाड़ियों की दो टीमें खड़ी की गयीं । एक टीम में टैस्ट स्टार को शामिल किया गया । दूसरे दिन एक प्रदर्शन मैच हुआ । टैस्ट स्टार की बैटिंग देखने लोग उमड़ पड़े ।

टैस्ट स्टार पारी की शुरुआत करने आया । लोकल बॉलर खुद को टैस्ट स्टार को गेंद फेंकता पाकर बहुत उत्तेजित था । उत्तेजना से भर कर उसने पहली बहुत तेज गेंद फेंकी । बैटसमैन क्लीन बोल्ड हो गया लेकिन अम्पायर ने नो बाल का इशारा किया !

दूसरी गेंद तेजी से अन्दर मुड़कर आई और पैड पर विकेटों के सामने लगी ! लेकिन अम्पायर ने एल० बी० डब्ल्यू० की अपील नामंजूर की ।

तीसरी गेंद बल्ले को चकमा देकर तीनों स्टम्पस उखाड़ ले गयी । अम्पायर ने फिर नो बाल का इशारा दिया । बॉलर चौथी गेंद फेंकने जा ही रहा था कि अम्पायर उसके पास गया और बोला, 'बेवकूफ, जरा ढीली गेंदें फेंक ताकि लोग टेस्ट स्टार की बैटिंग कमाल देख सके । यह जो इतने लोग आये हैं वह तेरी बॉलिंग देखने नहीं आये । समझा ?'

विरोधाभास —जगदीश सरीन

सिनेमा में,
दिखाते हैं ।
'धूम्रपान वर्जित है
सिगरेट न जलाइए ।'
इसके
तुरन्त बाद आता है ,
'पनामा आखरी कश तक
मजा देती है
शौक से पीजिए-पिलाइए ।'

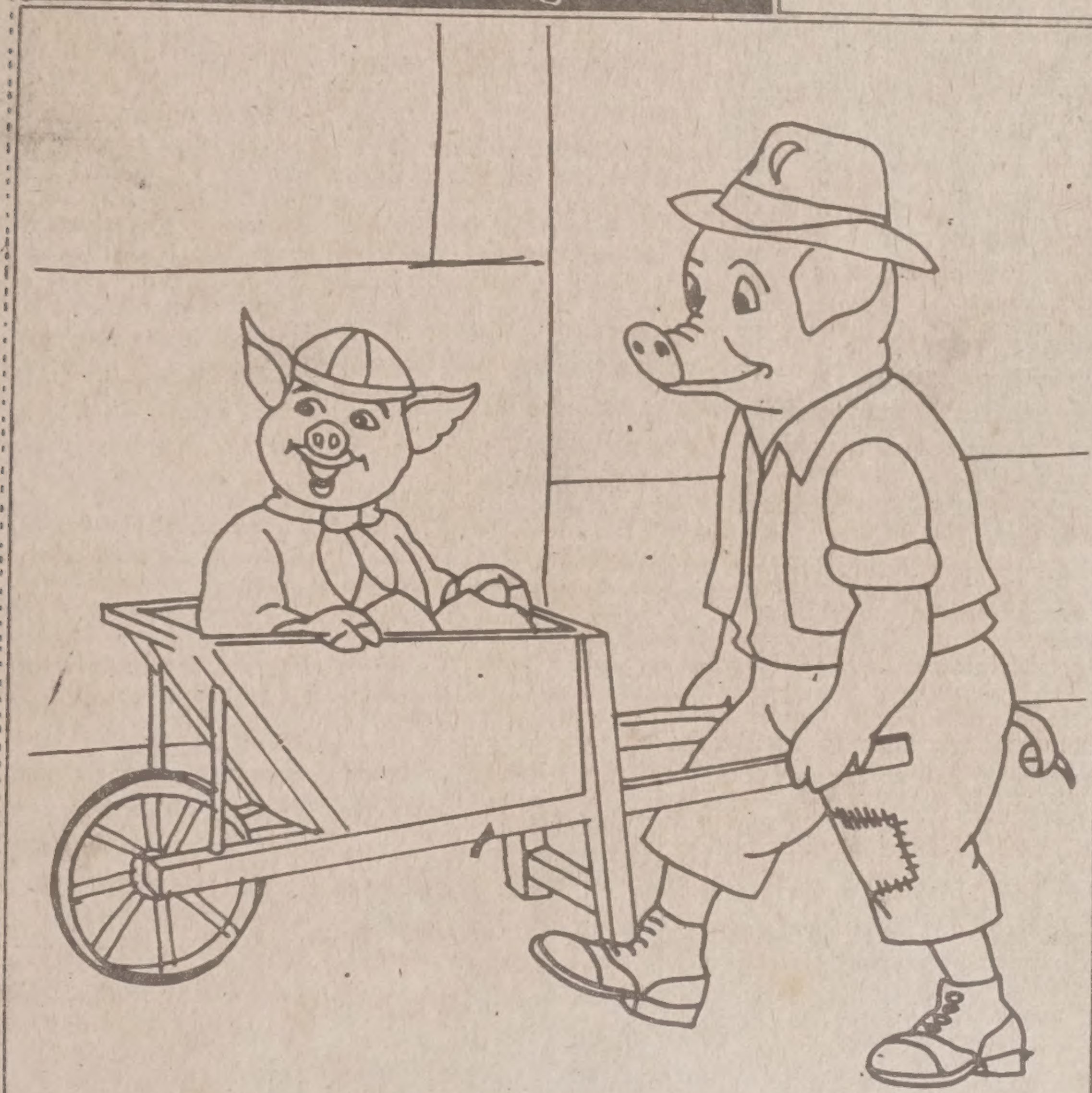
दीवाना-कैमल

रंग प्रतियोगिता

निःशुल्क प्रवेश

पुरस्कार जीतिए:

कैमल–पहला इनाम ३० रु.
कैमल–दूसरा इनाम २० रु.
कैमल–तीसरा इनाम १० रु.
कैमल–आश्वासन इनाम ५
दीवाना - आश्वासन इनाम ५
कैमल–सर्टिफिकेट १०



केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामील हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहे कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पत्ते पर भेजिए, दीवाना, ८-बी, बहादूर शहा जाफर मार्ग, नयी दिल्ली ११०००२
परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

नाम .... उम्र ....

पता ....

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।

चित्र भेजने की अंतिम तारीख: ९-६-७९

CONTEST NO.8

VISION



सरकारी मर्तबान

बनाम-सरकारी मेहमान

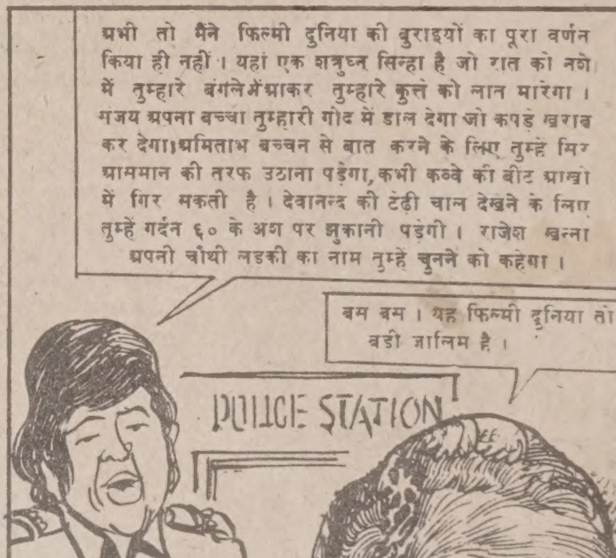
ईटमैन कलर, संगीत—रवीन्द्र चैन

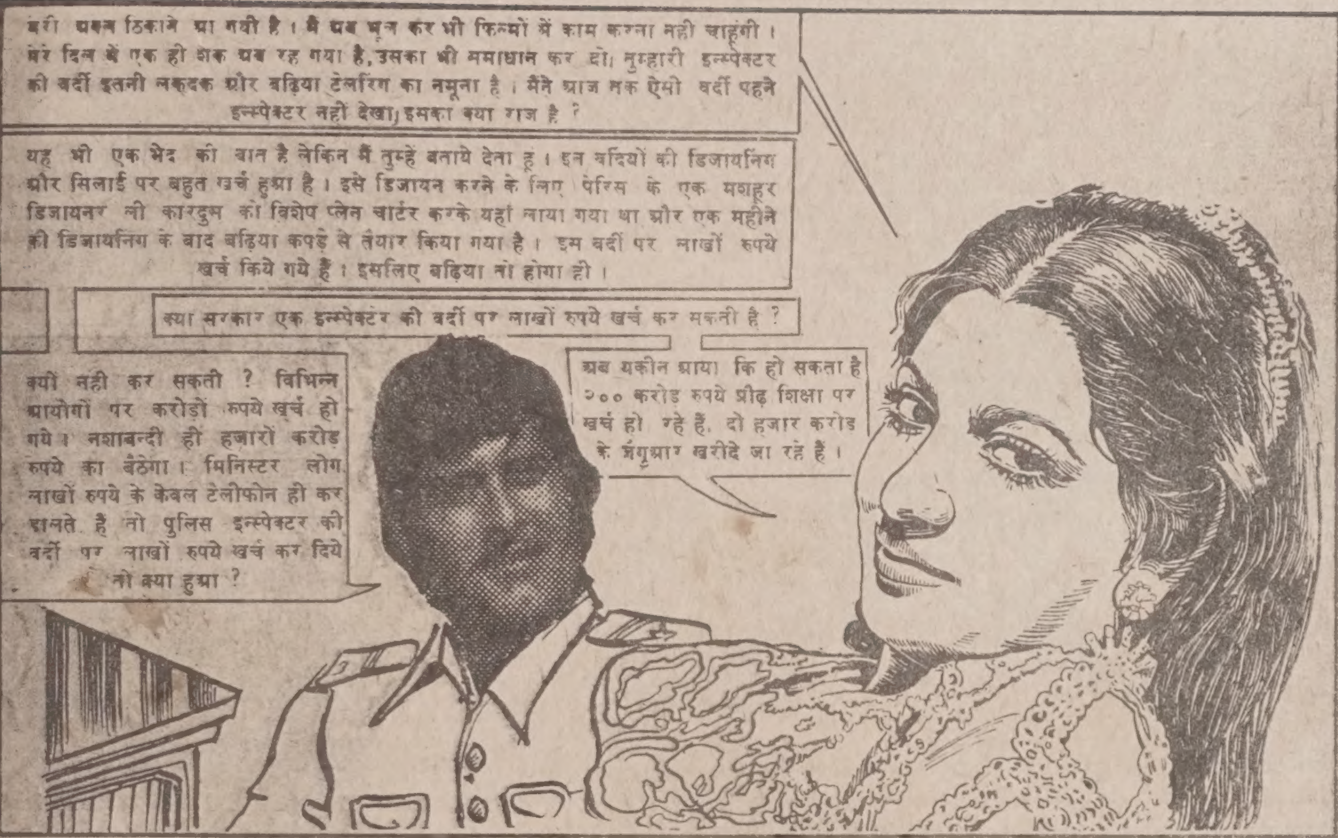
कलाकार–विनोद खटना, यासमलीन, बिनडू, रणचीत, ग्रमजद खांड ।

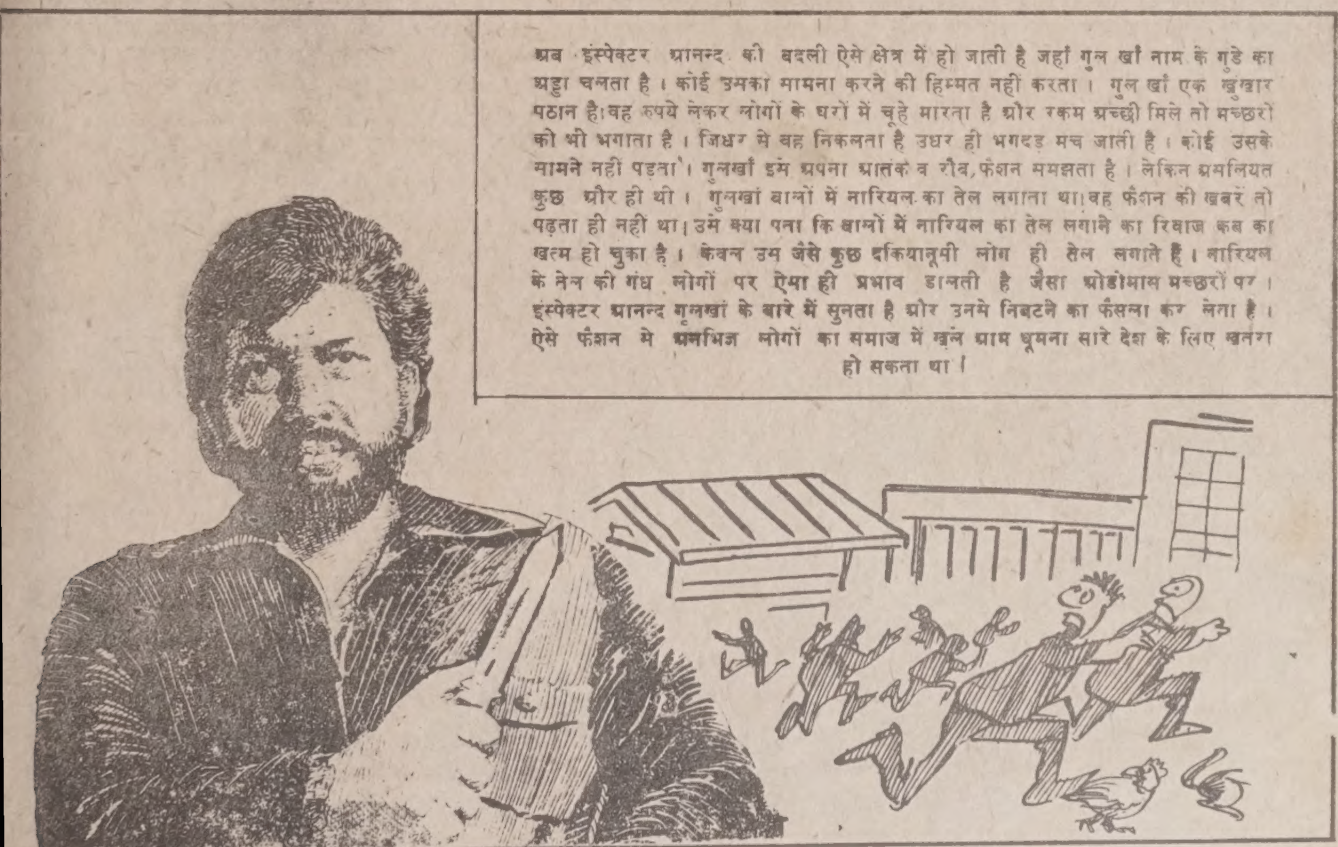
मरकारी मर्तबान कहानी एक पुलिम इन्स्पेक्टर की है जो सरकारी मर्तबान में ग्रचार डालने की गलती कर बैठा, उमका फल उमे भुगतना पड़ा । कहानी यूं है-इन्स्पेक्टर ग्रानन्द (विनोद खटना) एक बहुत ईमानदार ग्रादमी था । जिस ग्रादमी मे रिश्वत लेना उसका काम जरूर कर दिया करता था । चोर ग्रौर गुंडे ग्रानन्द के नाम से ही थर-थर कांपने लगते थे । इसका एक वैज्ञानिक कारण भी था 'वह यह कि ग्रानन्द खाने के माथ प्याज बहुत खाया करता था क्योंकि ग्राजकल होटलों में प्याज ही ऐसी चीज रह गयी है जो खाने के माथ फ्री मिलती है । ज्यादा प्याज खाने से उमके मुंह से गैम निकलती थी जिससे ग्रासपास बैठे लोगों को झुरझुरी ग्रा जाती थी । इन्स्पेक्टर ग्रानन्द विवाहित था । उसकी पत्नी किसी दूमरे पुरुष मे प्यार करती थी । ग्रानन्द को इसकी चिन्ता नहीं थी चूंकि वह दिन ही दिल में खुद प्याज से प्यार करता था । एक दिन ग्रानन्द को बिन्दिया नाम की एक बंजारिन लड़की मिली जो फिल्म स्टार बनने बम्बई ग्राई थी ।



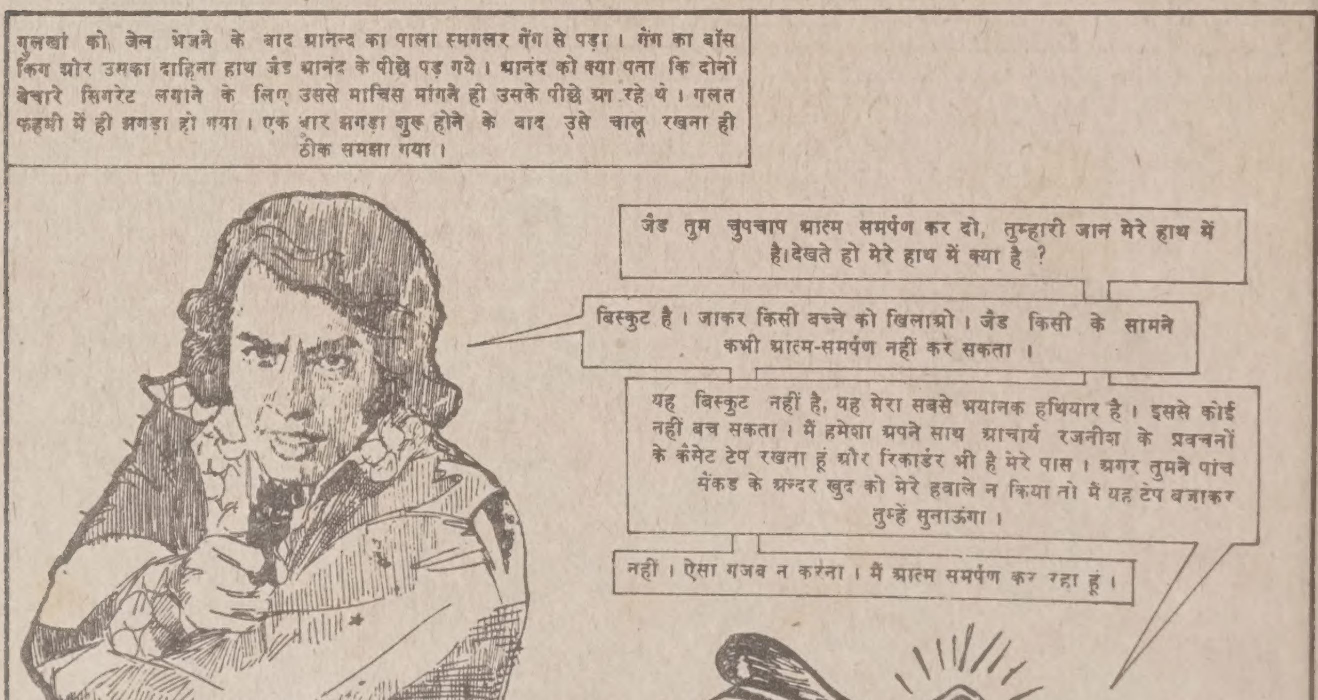




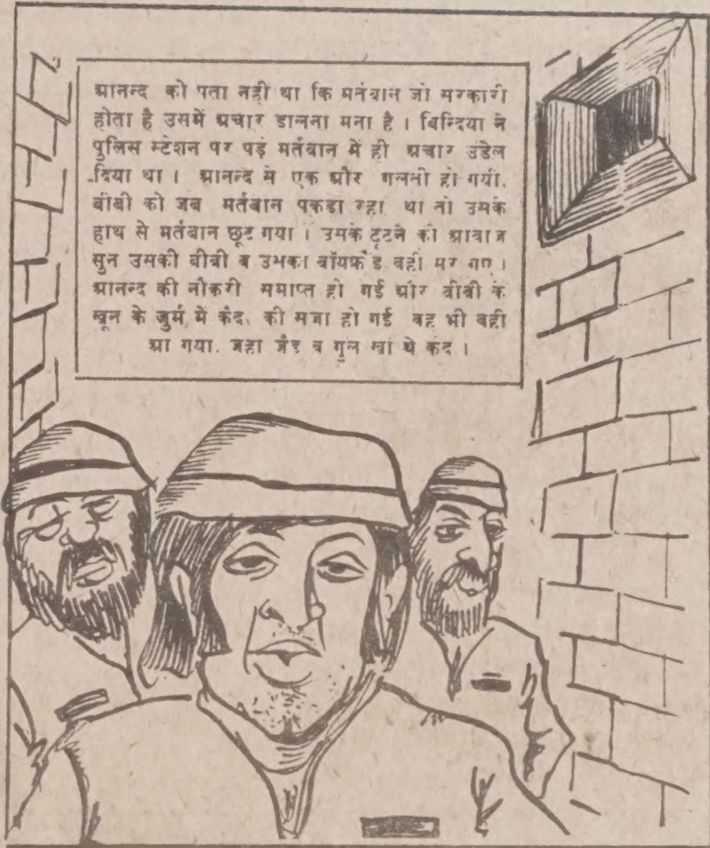

मेरी अक्ल ठिकाने आ गयी है। मैं अब भूल कर भी फिल्मों में काम करना नहीं चाहूंगी। मेरे दिल में एक ही शक अब रह गया है, उसका भी समाधान कर दो। तुम्हारी इन्स्पेक्टर की वर्दी इतनी चकदक और बढ़िया टेलरिंग का नमूना है। मैंने आज तक ऐसी वर्दी पहने इन्स्पेक्टर नहीं देखा। इसका क्या राज है ?
यह भी एक भेद की बात है लेकिन मैं तुम्हें बताये देता हूं। इन वर्दियों की डिजायनिंग और सिलाई पर बहुत खर्च हुआ है। इसे डिजायन करने के लिए पेरिस के एक मशहूर डिजायनर ली कारदुम को विशेष प्लेन चार्टर करके यहां लाया गया था और एक महीने की डिजायनिंग के बाद बढ़िया कपड़े से तैयार किया गया है। इस वर्दी पर लाखों रुपये खर्च किये गये हैं। इसलिए बढ़िया तो होगा ही।
क्या सरकार एक इन्स्पेक्टर की वर्दी पर लाखों रुपये खर्च कर सकती है ?
क्यों नहीं कर सकती ? विभिन्न आयोगों पर करोड़ों रुपये खर्च हो गये। नशाबन्दी ही हजारों करोड़ रुपये का बैठेगा। मिनिस्टर लोग लाखों रुपये के केवल टेलीफोन ही कर डालते हैं तो पुलिस इन्स्पेक्टर की वर्दी पर लाखों रुपये खर्च कर दिये तो क्या हुआ ?
अब यकीन आया कि हो सकता है २०० करोड़ रुपये प्रौढ़ शिक्षा पर खर्च हो रहे हैं, दो हजार करोड़ के अंगूआर खरीदे जा रहे हैं।

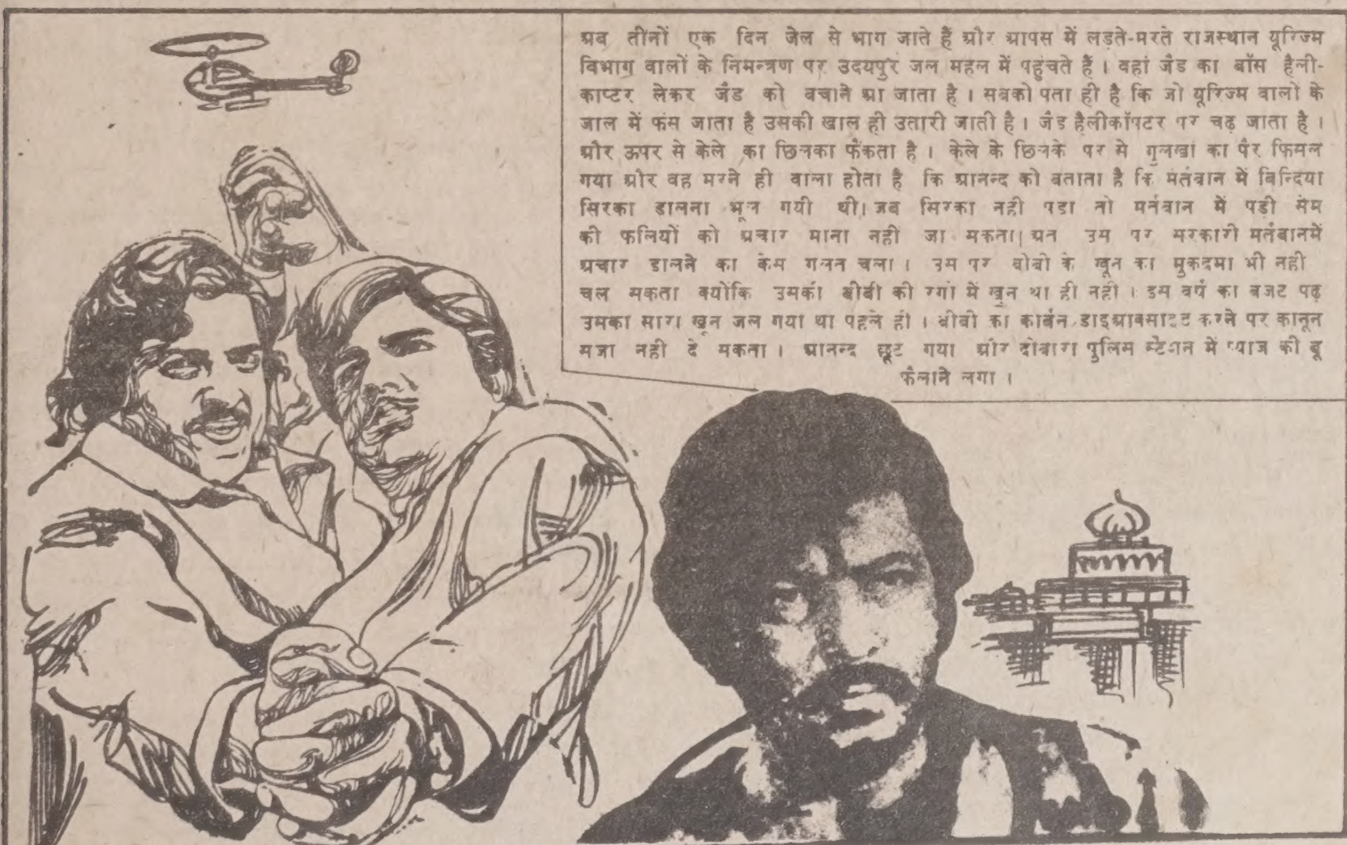

अब इंस्पेक्टर आनन्द की बदली ऐसे क्षेत्र में हो जाती है जहां गुल खां नाम के गुंडे का अड्डा चलता है। कोई उसका सामना करने की हिम्मत नहीं करता। गुल खां एक खूंखार पठान है। वह रुपये लेकर लोगों के घरों में चूहे मारता है और रकम अच्छी मिले तो मच्छरों को भी भगाता है। जिधर से वह निकलता है उधर ही भगदड़ मच जाती है। कोई उसके सामने नहीं पड़ता। गुलखां इसे अपना आतंक व रौब, फैशन समझता है। लेकिन असलियत कुछ और ही थी। गुलखां बालों में नारियल का तेल लगाता था। वह फैशन की खबरें तो पढ़ता ही नहीं था। उसे क्या पता कि बालों में नारियल का तेल लगाने का रिवाज कब का खत्म हो चुका है। केवल उस जैसे कुछ दकियानूसी लोग ही तेल लगाते हैं। नारियल के तेल की गंध लोगों पर ऐसा ही प्रभाव डालती है जैसा ओडोमास मच्छरों पर। इंस्पेक्टर आनन्द गुलखां के बारे में सुनता है और उससे निबटने का फैसला कर लेता है। ऐसे फैशन से अनभिज्ञ लोगों का समाज में खुले आम घूमना सारे देश के लिए खतरा हो सकता था।


ग्रौर एक दिन ग्रानन्द भेष बदल कर गुलखाँ के ग्रड्डे में प्रवेश पाने में सफल हो जाता है। ग्रौर उसे गिरफ्तार करने की कोशिश करता है।
गुलखाँ ग्रब तुम बच नहीं सकते। तुम्हें मेरे साथ चलना ही होगा।
तुम्हारा खेल खत्म हो चुका है, मैं तुम्हें साथ लिए बिना नहीं जाऊंगा।
भाई मेरी जान छोड़ दे। मेरा सारा पैसा ले-ले, मुझे साथ मत ले चल। मैं मानता हूं कि मुझे बहुत सी बुरी ग्रादतें हैं। मैं ग्राज ही से मीट ग्रौर शराब छोड़ दूंगा। नाक में अंगुली ग्रौर कान में तिनका कभी नहीं करूंगा। रोज सोने से पहले काला दंत मंजन किया करूंगा। मुझे छोड़ो।
मुझ पर रहम करो—मेरी जान छोड़ दो। मैं तुम्हारे पैर पकड़ता हूं। तुम कहो तो मैं तली हुई चीजें ग्रौर मिर्च खाना भी छोड़ दूंगा। रोज उसी ब्लेड से शेव किया करूंगा जिससे तुम कहोगे।
मैं तुम्हारी कोई बात नहीं मानता। मैं तुम्हें कानून के हवाले करके रहूंगा चलो मेरे साथ पुलिस स्टेशन।
पुलिस स्टेशन? तुमने पहले ही मुझे बता दिया होता कि मुझे पुलिस स्टेशन ले जाना चाहते हो तो इतनी हील हुज्जत हो न करना। मैं समझा कि तुम मुझे रजनीश के ग्राश्रम ले जा रहे हो।


गुलखाँ को जेल भेजने के बाद ग्रानन्द का पाला स्मगलर गैंग से पड़ा। गैंग का बॉस किंग ग्रौर उसका दाहिना हाथ जैंड ग्रानंद के पीछे पड़ गये। ग्रानंद को क्या पता कि दोनों बेचारे सिगरेट लगाने के लिए उससे माचिस मांगने ही उसके पीछे ग्रा रहे थे। गलत फहमी में ही झगड़ा हो गया। एक बार झगड़ा शुरू होने के बाद उसे चालू रखना ही ठीक समझा गया।
जैंड तुम चुपचाप ग्रात्म समर्पण कर दो, तुम्हारी जान मेरे हाथ में है। देखते हो मेरे हाथ में क्या है?
बिस्कुट है। जाकर किसी बच्चे को खिलाग्रो। जैंड किसी के सामने कभी ग्रात्म-समर्पण नहीं कर सकता।
यह बिस्कुट नहीं है, यह मेरा सबसे भयानक हथियार है। इससे कोई नहीं बच सकता। मैं हमेशा ग्रपने साथ ग्राचार्य रजनीश के प्रवचनों के कैसेट टेप रखता हूं ग्रौर रिकार्डर भी है मेरे पास। ग्रगर तुमने पांच सेकंड के ग्रन्दर खुद को मेरे हवाले न किया तो मैं यह टेप बजाकर तुम्हें सुनाऊंगा।
नहीं। ऐसा गजब न करना। मैं ग्रात्म समर्पण कर रहा हूं।


आनन्द बाबू मुझे पता लगा कि तुम्हारी बीबी सेम की फलियों का अचार डालना नहीं जानती और तुम्हें सेम का अचार बहुत अच्छा लगता है। मैं घर से बनवा कर लाई हूं।
बिन्दिया, यह तुमने बहुत अच्छा किया। सेम के अचार के बिना मुझे जीवन सूना लग रहा था। इसके साथ प्याज बहुत अच्छी लगती हैं। यह मर्तबान मैं घर ले जाकर बीबी को दे दूंगा। उसके बॉय फ्रेंड को बहुत अच्छा लगता है।
GOI PROPERTY


आनन्द को पता नहीं था कि मर्तबान जो सरकारी होता है उसमें अचार डालना मना है। बिन्दिया ने पुलिस स्टेशन पर पड़े मर्तबान में ही अचार उंडेल दिया था। आनन्द से एक और गलती हो गयी. बीबी को जब मर्तबान पकड़ा रहा था तो उसके हाथ से मर्तबान छूट गया। उसके टूटने की आवाज सुन उसकी बीबी व उसका बॉयफ्रेंड वहीं मर गए। आनन्द की नौकरी समाप्त हो गई और बीबी के खून के जुर्म में कैद की सजा हो गई वह भी वहीं आ गया. जहां जैद व गुल खां थे कैद।


अब तीनों एक दिन जेल से भाग जाते हैं और आपस में लड़ते-मरते राजस्थान टूरिज्म विभाग वालों के निमन्त्रण पर उदयपुर जल महल में पहुंचते हैं। वहां जैंड का बॉस हैली-काप्टर लेकर जैंड को बचाने आ जाता है। सबको पता ही है कि जो टूरिज्म वालों के जाल में फंस जाता है उसकी खाल ही उतारी जाती है। जैंड हैलीकॉप्टर पर चढ़ जाता है। और ऊपर से केले का छिलका फेंकता है। केले के छिलके पर से गुलखां का पैर फिसल गया और वह मरने ही वाला होता है कि आनन्द को बताता है कि मर्तबान में बिन्दिया सिरका डालना भूल गयी थी। जब सिरका नहीं पड़ा तो मर्तबान में पड़ी सेम की फलियों को अचार माना नहीं जा सकता। अत उस पर सरकारी मर्तबानमें अचार डालने का केस गलत चला। उस पर बीबी के खून का मुकदमा भी नहीं चल सकता क्योंकि उसकी बीबी की रगों में खून था ही नहीं। इस वर्ष का बजट पढ़ उसका सारा खून जल गया था पहले ही। बीबी का कार्बन डाइआक्साइड करने पर कानून सजा नहीं दे सकता। आनन्द छूट गया और दोबारा पुलिस स्टेशन में प्याज की बू फैलाने लगा।

नया धारावाहिक उपन्यास

ठोकर

– लेखिका संगीता

भाग ६

आखिर होली का दिन आ ही गया—रंग खेलने के बाद मां ने विनोद को नहलाकर नया जोड़ा पहनाया···फिर मां उसकी छोटी बहन को तैयार करने लगीं और विनोद अपने कमरे में आकर बैठ गया···पता नहीं क्यों फूलवती बिना उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था···वह सोच रहा था कि नया जोड़ा पहनकर किसको दिखाए···फूलवती होती तो खुश होकर उसकी प्रशंसा करती···फिर उसे ऐसा लगा कि फूलवती उसके सामने फिरोजी जोड़ा पहने खड़ी बड़ी अच्छी लग रही है, और उसके पांव काले सैंडलों में से चमकते हुए गोरे-गोरे बड़े प्यारे लग रहे हैं।

अचानक विनोद के पिताजी ने उसे पुकारा और वह चौंक पड़ा···फिर एकाएक उसका दिल बैठ गया···वहां न फूलवती थी और न उसकी परछाई—वह चुपचाप उठकर बाहर चला आया···विनोद के पिताजी ने एक-एक रुपये के दो नोट उसे दिए जिन्हें चुपचाप विनोद ने जेब में रख लिया।

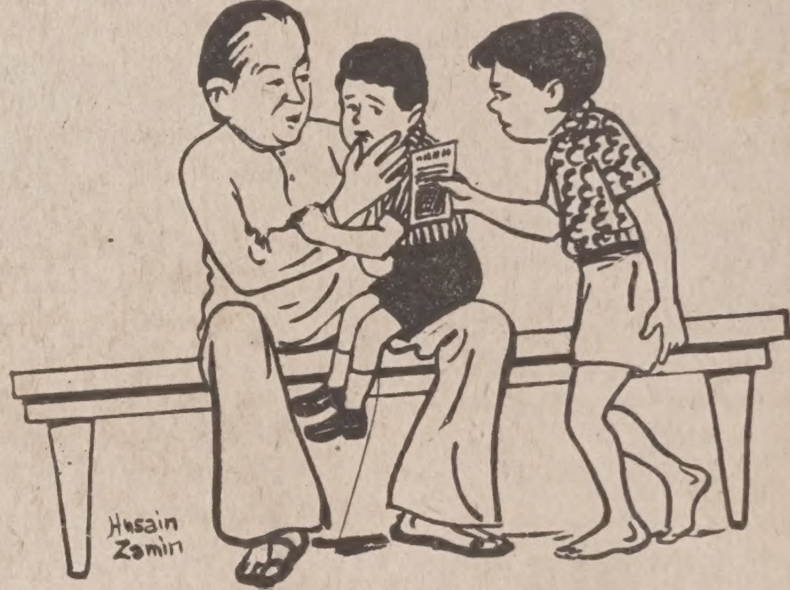
'क्या बात है बेटा ?' पिताजी ने विनोद को लिपटाकर चूम लिया, 'तुम चुप-चुप क्यों हो !'

पिताजी की गोद में विनोद को बड़ा सन्तोष और प्यार मिला···विनोद सबकुछ भूल गया। पिताजी ने उसे गोद में बिठा लिया था—अचानक सुरेश ने पिताजी के सामने सौ रुपये का नोट डालते हुए कहा—

'मामाजी···इसके छोटे नोट दे दीजिए।'

पिताजी ने विनोद को चौकी पर बिठाकर सुरेश का सौ रुपये का दिया हुआ नोट जेब में रख लिया और सुरेश को एक-एक के छोटे नोटों की गड्डी दे दी। सुरेश ने उसी गड्डी से पहला नोट निकालकर विनोद को दे दिया। विनोद ने नोट लेकर नमस्ते कही··· और सुरेश उसके सिर पर हाथ फेरकर चला गया।

पिताजी ने कनखियों से विनोद की मां की ओर देखा जो काम में लगी हुई थीं और फिर उठकर कमरे में चले आए, वहां उन्होंने सौ का नोट निकालकर देखा और उनका सन्देह विश्वास में बदल गया···नोट के एक कोने में बहुत छोटे-से उन्हीं के हस्ताक्षर थे···



यह नोट वही था जो सौ-सौ के दस नोटों के साथ दादाजी के सन्दूक से गायब हो गया था···।

विनोद के पिताजी का खून खौलकर रह गया···उन्होंने नोट तह करके जेब में रखा और बाहर चले आए···अनुमान तो उन्होंने कुछ होली की धूम-धाम ही से लगा लिया था। वैसे भी बुआ सदा अपनी गरीबी का ही रोना रोती रहती थीं···कई लोग उन्हें कृतघ्न भी कहते थे—थोड़ी देर बाद विनोद, पिताजी, फूफाजी और सुरेश के साथ अपने जाननेवालों के यहां होली मिलने गया। पिताजी ने कुछ खिलौने विनोद को खरीद दिए···घर आकर विनोद उदास हो गया कि फूलवती तो है नहीं खिलौने वह किसके साथ खेले···पद्मा के साथ वह इसलिए नहीं खेलना चाहता था कि वह गंदी बनी रहती है—लेकिन आज तो पद्मा ने भी नए कपड़े पहने थे और वह साफ-सुथरी और अच्छी लग रही थी···उसे देखकर विनोद ने सोचा क्यों न आज पद्मा के साथ ही खेल लिया जाए वरना बेकार पड़े रहने से तो बेकार फूलवती की याद आएगी—विनोद खिलौने छोड़कर बाहर आ गया···पद्मा आंगन में खड़ी छतवाली भाभी से बातें कर रही थी और विनोद पद्मा को बस निहारता ही रह गया···विनोद और पद्मा की आयु में चंद घंटों का ही अन्तर था और इन चंद घंटों ने विनोद को बड़ा कर दिया था···वह और बात थी कि शारीरिक रूप से वह पद्मा से एक डेढ़ वर्ष छोटा ही लगता था···कारण यह कि एक तो लड़कियों का प्राकृतिक उठान ही लड़कों की अपेक्षा अधिक होता है और फिर पद्मा खुराक तथा धमाचौकड़ी में सब बच्चों से आगे थी···मुहल्ले के बच्चे उससे पनाह मांगते थे···इस निश्चितता और लापरवाही ने उसका उठान इतना बढ़ा दिया था कि शरीर के विकास में वह फूलवती से भी बड़ी लगती थी—यह अलग बात थी कि वह गंदी रहा करती थी इसलिए अच्छी न लगती थी—वैसे वह इतनी बुरी भी नहीं थी—।

इस समय तो विशेष रूप से वह अच्छी लग रही थी···नहाई-धोई···निखरा हुआ रंग, दोपट्टे का पल्लू सिर से ढलका हुआ और आड़ी निकली हुई मांग···विनोद को फूलवती के पैर बहुत सुन्दर लगते थे इसलिए सबसे

पहले उसकी दृष्टि पद्मा के पैरों पर गई··· इस समय पद्मा के पैर लाल दोपट्टी की चप्पल में अपनी हल्की गुलाब रंगत के कारण फूलवती के पैरों से भी बहुत अच्छे लग रहे थे···लेकिन नहीं···विनोद ने ठंडी सांस लेकर सोचा···जो बात फूलवती में है वह पद्मा में नहीं हो सकती—उसे फिर फूलवती की याद आने लगी और वह पद्मा को साथ खेलने के लिए बुलाए बिना ही कमरे में चला आया···यह कमरा दादाजी का था···विनोद का अधिक समय इसी कमरे में बीतता था—।

थोड़े दिन बाद मां के नाम खरीदे हुए प्लाट पर भवन निर्माण कार्य आरंभ हो गया···प्लानिंग इत्यादि पहले ही पूरी हो चुकी थी । कुछ लोगों के परामर्श पर दादाजी ने पहले पानी की कठिनाई से बचने के लिए मीटर की अनुमति प्राप्त की और नल लगवा दिया गया···फिर मकान बनना आरंभ हो गया और रुपया पानी के समान बहने लगा···ब्लैक का जमाना था···हर चीज वास्तविक मूल्य से दुगुने दामों पर मिलती···सात-आठ रुपये की सीमेंट की बोरी अठारह-बीस में खरीदी जाती थी ।

पिताजी टूर पर चले गए थे और सारा काम दादाजी को करना पड़ता था···भवन-निर्माण का उन्हें कोई अनुभव भी नहीं था···इसलिए जहां एक खर्च होना चाहिए था वहां दस-दस खर्च होते थे लेकिन रुपया चूंकि काफी था इसलिए कुछ पता नहीं चलता था···सारी चीजें राज-मजदूरों के परामर्श पर खरीदी जाती थीं···और राज-मजदूर बुढ़ऊ को खूब उल्लू बनाते थे··· उनकी अनुभवहीनता से खासा लाभ उठाते··

सीमेंट की एक बोरी के स्थान पर तीन खरीदी जाती थीं···एक तो इमारत में लग जाती शेष दो राज-मजदूर उड़ाकर ले जाते—निर्माण का सारा काम उन्हीं के सिर पर था इसलिए वह जो चाहते करते···जितनी देर चाहते काम करते और जब चाहते आराम कर लेते···मजदूरी मुफ्त मिल रही थी और बिना आवश्यकता अधिक आदमी लगा रखे थे—।

दादाजी को पहले तो घर के कामकाज से ही अवकाश नहीं मिलता था कि राज-मजदूरों के काम-काज की देख-भाल कर सकें···फिर उनका बुढ़ापा इस बात की अनुमति नहीं देता था कि घटों धूप में खड़े होकर उनसे काम करवाया जाए···राज भी उन्हें कुछ ऐसे मिल गए थे जो जबानी सहानुभूति जताने में निपुण थे और साफ मन के दादाजी उनकी नीयत पर विश्वास कर लेते···काम की बागडोर उन्होंने ढीली छोड़ रखी थी—।

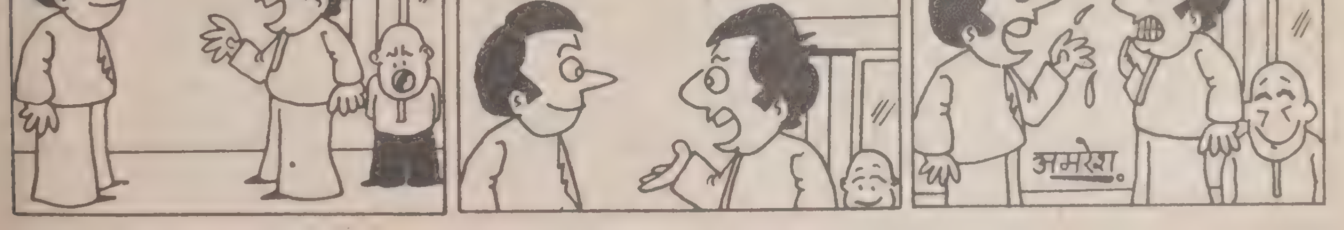
मुहल्लेवाले मकान बनते हुए और बेईमानियां होते देखते तो मकान बनवानेवालों की अनुभवहीनता और अंधेपन पर खेद करते···दो मजदूर काम करते और चार छाया में बैठकर आराम करते···मिस्त्री आधा समय तो गप्प-शप्प में उड़ा देते···मकान की प्रगति चींटी की चाल से हो रही थी··· दादाजी कभी-कभार चक्कर लगा आते और फिर हुक्का लेकर गुड़गुड़ करने बैठ जाते ।

लेकिन विनोद नियम से स्कूल के बाद घंटों वहीं बैठा अपने नये बनते मकान को देखता रहता···लेकिन उस बेचारे में इतनी सूझ-बूझ कहां कि किसी राज-मजदूर से पूछता—'मकान तो यहां बन रहा है···यह बोरी कहां जा रही है ?' 'यह दो मजदूर केवल काम कर रहे हैं और चार उधर बैठे विश्राम क्यों कर रहे हैं···? पैसे तो सब लेंगे ।'—वह तो यह देखकर ही खुश हो रहा था कि मकान बन रहा है—उसका अपना बन रहा है···वह मकान की धुन में इतना खोया हुआ था कि इन दिनों उसके मन से फूलवती का ध्यान भी निकल गया था, उसे केवल इस बात की प्रतीक्षा थी कि जल्दी-से-जल्दी मकान बन कर तैयार हो जाए और वह नए मकान में आकर रहने लगे—कभी-कभी उसे फूलवती की याद आती तो वह यह सोचकर मन को सांत्वना दे लेता कि अब वह जल्दी ही बड़ा हो जाएगा और मांजी फूलवती से उसकी शादी कर देंगी···तब वह भी उसके साथ नए घर में रहा करेगी··· दोनों खूब खेला करेंगे—।

भवन-निर्माण का काम आरंभ हुए छ: महीने बीत गए थे—अबतक केवल मकान की नींव रखकर फर्श के तल को सड़क से थोड़ा ऊंचा किया जा सका था···अभी ढंग से दीवारें भी खड़ी नहीं हुई थीं···इधर छः महीने से पिताजी टूर से वापस नहीं लौटे थे । एक दिन विनोद एक दीवार की छाया में खड़ा हुआ राज-मजदूरों को काम करते हुए देख रहा था कि सामने वाले एक मकान की बैठक से एक अजनबी ने उसको पुकारा··· वह चुपचाप बैठक में चला गया ।

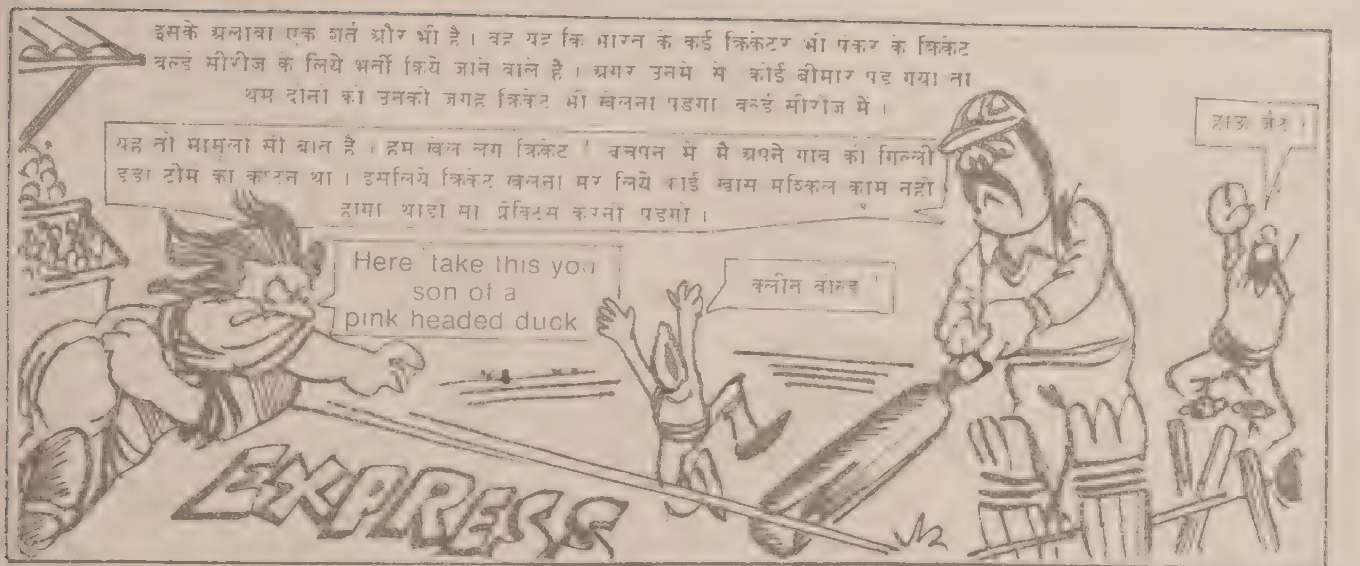
'क्यों बेटा···यह तुम्हारा ही मकान बन रहा है ?' उस व्यक्ति ने विनोद से पूछा ।

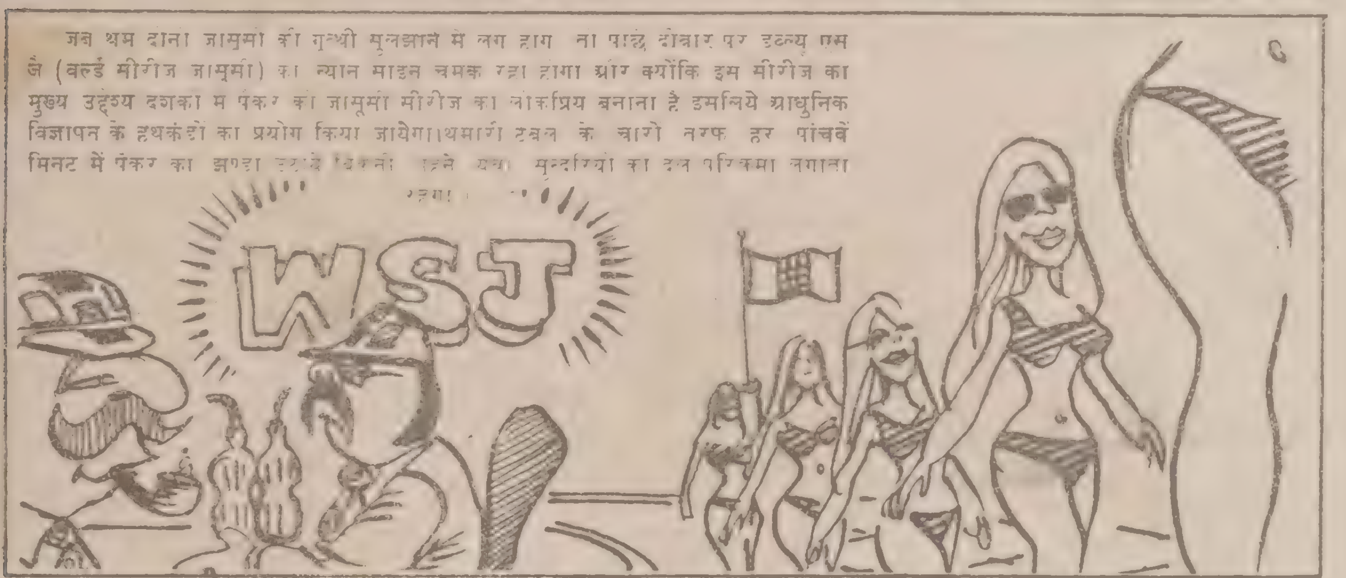
शेष पृष्ठ ३८ पर





सिलबिल पिलपिल
पैकर सर्कस में
शऽऽऽ ! ज़ोर से बात नहीं बोलना मांगता, अगर किसी ने सुन लिया तो हमको भारत में जासूसी करने नहीं दिया जायेगा। जानता है मेरे हाथ में क्या है ?
म्हारे नाम से चिट्ठी आयी होगी। म्हारी भैंस नयी हो गयी होगी।
तेरी अक्ल भैंस से आगे कभी नहीं जाती ? पैकर ने हमको कांट्रेक्ट भेजा है कैरी पैकर।
आस्ट्रेलिया के कैरी पैकर ने जिस तरह क्रिकेटरों को भर्ती करके पैकर सीरीज चलाया है उसी तरह अब वह दुनिया के चोटी के जासूसों को अपने जासूसी पैकर सीरीज में भर्ती करके तहलका मचा देना चाहता है। इस सिलसिले में उसने सबसे पहले हमको अपनी ऑफर भेजी है। कैरी पैकर के जासूसी सीरीज में भर्ती हो जाओ और अपनी सेहत बनाओ। खाने-पीने और रहने का खर्चा पैकर देगा। इसके अलावा साल में मुझे तीस हजार डालर हम दोनों में से हर एक को मिलेगा। पिलपिल को गंजा होने के कारण अतिरिक्त बोनस भी मिलेगा।
कांट्रेक्ट की शर्तें।
हमने देखा ! हम हमको जोकर जासूस समझते रहे, अब तुम्हें पता लगेगा। कैरी पैकर हमारी कद्र समझ गया है।
थर्टी थाऊजेंड आस्ट्रेलियन डालर्स !
पैकर सीरीज में जासूसी करते समय हम दोनों को पैकर सीरीज की वर्दी पहननी होगी। सिर पर नीले और हरे चैक के डिजायन वाली कैप होगी। आँखों पर हल्के पीले रंग का चश्मा होगा। सूट स्ट्राबेरी कलर का होगा, और टाईयां कोबरा साप की खाल के डिजायन की होंगी और कपड़े पहनने की मनाही होगी।
जासूसों के अतिरिक्त पैकर अपने सीरीज में चोर और खूनी भी भर्ती कर रहा है। वे पैकर सीरीज के लिये चोरी, डाके, और खून करेंगे। पैकर सीरीज में भर्ती जासूस उन अपराधों का पता लगायेंगे। जिनका खून होगा वह भी पैकर सीरीज के ही आदमी होंगे।


इसके अलावा एक शर्त और भी है। वह यह कि भारत के कई क्रिकेटर भी पैकर के क्रिकेट वर्ल्ड सीरीज के लिये भर्ती किये जाने वाले हैं। अगर उनमें से कोई बीमार पड़ गया तो हम दोनों को उनकी जगह क्रिकेट भी खेलना पड़ेगा वर्ल्ड सीरीज में।
यह तो मामूली सी बात है। हम खेल लेंगे क्रिकेट! बचपन में मैं अपने गांव की गिल्ली डंडा टीम का कप्तान था। इसलिये क्रिकेट खेलना मेरे लिये कोई खास मुश्किल काम नहीं होगा थोड़ी सी प्रैक्टिस करनी पड़ेगी।
हाऊ जैट!
Here take this you son of a pink headed duck
क्लीन बोल्ड!
EXPRESS


जब हम दोनों जासूसी की गुत्थी सुलझाने में लगे होंगे तो पीछे दीवार पर डब्ल्यू एस जे (वर्ल्ड सीरीज जासूसी) का न्यान साइन चमक रहा होगा और क्योंकि इस सीरीज का मुख्य उद्देश्य दर्शकों में पैकर की जासूसी सीरीज को लोकप्रिय बनाना है इसलिये आधुनिक विज्ञापन के हथकंडों का प्रयोग किया जायेगा। हमारी टेबल के चारों तरफ हर पांचवें मिनट में पैकर का झण्डा उठाये बिकनी पहने हुए सुन्दरियों का दल परिक्रमा लगाता रहेगा।
WSJ


बीच-बीच में हमको पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न वस्तुओं के लिये विज्ञापन भी देने होंगे। क्योंकि इन्हीं विज्ञापनों के बल पर सीरीज का खर्चा चलेगा। यह नहीं कहना होगा कि हम इस समय महत्वपूर्ण जासूसी गुत्थी सुलझाने में लगे हैं। व्यापार पैकर का मुख्य उद्देश्य है।
आलवेज रिमेम्बर कुआ-कुआ कोला।
हम जासूसी गुत्थी सुलझाते समय हमेशा बेनसंज का बना कुआ कुआ कोला पीते हैं। इनसे सारी गुत्थियां आसानी से सुलझ जाती हैं आप भी आजमाइये!



जासूसों और अपराधियों में जब मुठभेड़ होगी तो लड़ने के भी पंकर वर्ल्ड जासूसी सीरीज के अपने विषय होंगे। जासूस का मुक्का इस तरह
पर मारना होगा कि ग्लव पर लिखा W S J कैमरे के ठीक सामने हो और मुक्का जड़ने से पहले कुछ देर के लिये हवा में फ्रीज हो जाये।
यह ले बेटे ! यह पंकर वर्ल्ड मीरीज का मुक्का है।
मेरा जबड़ा भी तो पंकर सर्कस का है।
WSJ
BING!!
पंकर सीरीज की रहस्यमय हत्या को सुलझाते समय बीच-बीच में जासूसों को पंकर टेलीविजन के चैनल नम्बर दो पर विज्ञापन देने होंगे।
Here ladies & gentlemen is the biggest mystery I am presenting before you, The mystery is CHAKKI underwear! The *cheapest* the best and the most comfortable. How do they afford so *low* price is the fantastic puzzle.
और गुण्डों के साथ लड़ाई में कभी-कभी नाक जान बूझ कर भी तुड़वनी पड़ेगी। अगर न टूटी तो पंकर सीरीज के स्पेशल सर्विस के आदमी हथौड़े से तोड़ देंगे। इससे मल्हम और बैन्डेज बनाने वाली कम्पनियों के माल का प्रचार किया जा सकेगा।
भाई जी, थमारी नाक टूट गयी इब के होगा ?
होगा के ? पैन्सन्स का बैण्ड एड लगाया है। देखते-देखते टूटी नाक जुड़ जायेगी। नाक कटी थोड़े ही है, टूटी ही तो है।
काश पैन्सन वाले दिल जोडने का भी बैन्डेज बनाते।



पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये।



आपस की बातें

[illegible]

केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

श्याम माहेश्वरी, 'अशोक'—फारबिसगंज (बिहार) : चाचा जी बुजुर्ग लोग भलाई की बातें समझायें तो उनकी बातें हमें अच्छी क्यों नहीं लगतीं ?

उ० : क्योंकि समझाते में वे कहीं न कहीं एक पते की बात भूल जाते हैं। जैसे हमारे एक पड़ौसी एक दिन अपने बच्चे को समझा रहे थे, 'देखो बेटा, मैं जब तुम्हारी उम्र में था तो बीस तक के पहाड़े एक सांस में सुना देता था। जब मैं तुम्हारी उम्र में था तो मैं सबसे अच्छा तैराक था। जब मैं तुम्हारी उम्र में था तो सबसे अच्छा कबड्डी का खिलाड़ी था। जब मैं तुम्हारी उम्र में था तो'''इस पर हमारे पड़ौसी की श्रीमती जी को ताव आ गया और वह झुंझला कर बोलीं, 'क्या तुम्हारी उम्र में था, तुम्हारी उम्र में था लगा रखी है। एक बात मुझसे पूछ लो, पंडित नेहरू जब तुम्हारी उम्र में थे, तो भारत के प्रधान मंत्री थे। तुम क्या हो ?'

कैलाश कुमार गुप्ता—बेरमो : चाचा जी, आपकी एक उंगली एकता की निशानी है। आप एक बार में एक ही प्रश्न का उत्तर देते हैं। क्या आपके हाथ की उठी एक उंगली का कोई और भी मतलब है ?

उ० : जी हां, इसका मतलब है, जीने का मजा तब है। जब आपके पड़ोसीकेपास खीर का कटोरा हो और आपके पास ऐसी ही मजबूत उंगली।

तसलीम अहमद खां—मुरादाबाद : मनुष्य मरना क्यों नहीं चाहता ?

उ० : आज का जीवन क्या मौत से कम है, जो वह मरना चाहेगा ?

योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर नागालैंड : जैसी आप बातें करते हैं, उस हिसाब से क्या आपका घर आगरा में नहीं होना चाहिये था ?

उ० : हम आपका मतलब समझ गये। विश्वास कीजिये दिल्ली में होते हुए भी हमारा दौलतखाना पूरा पागलखाना है।

मोहन मिश्रा—सिलीगुड़ी : चाचा जी, क्या चाचीजी आपको दूसरी शादी की अनुमति देंगी ?

उ० : अजीब प्रश्न किया है आपने; सड़क कूटने वाले एक इंजन के नीचे से टांग निकल जाये, तो दूसरे के नीचे कौन देना चाहेगा ?

सुरेन्द्र सिंह बर्बाद—मोरे, मणिपुर : जिसे दिल चाहे यदि वह लिफ्ट न दे तो उसे कौन सा शेर सुनाना चाहिए ?

उ० : अच्छे भले थे इश्क ने उल्लू बना दिया,
हम इतराये इश्क में जागे तमाम रात।

मोहन प्रकाश अग्रवाल—ग्वालियर : चाचा जी, मेरा हार्ट चोरी हो गया है। क्या करूं ?

उ० : खुशी के बैण्ड बजाइये। हार्ट नहीं होगा तो हार्टफेल होने का डर भी नहीं रहेगा। अब चाहे मोरारजी देसाई पचास बार लोक सभा में जयप्रकाश नारायण के मरने पर शोक प्रकट करें। आपकी बला से !

मो० जहांगीर—रांची : चाचाजी शराब बन्दी पर आपको खुशी है या रंज ?

उ० : शराबबन्दी पर तो खुशी है। पर इस प्रश्न पर जिस प्रकार जुबानबन्दी की जा रही है उसका रंज है।

धर्मेन्द्र अनिल—दुर्ग, रायपुर : चाचाजी मेरे पास एक ऐसा तेल है जिसे सर पर रगड़ने से बाल उग आते हैं, क्या आपके पास भेजूं।

उ० : हमारे पास एक ऐसी जीती जागती श्रीमती जी हैं जिनकी मौजूदगी में सर पर बाल टिकने मुश्किल हैं। कहिये पहले हम उन्हें आपके पास भेज दें।

अशोक जौहर, गगन—देहरादून : चाचा जी क्या आपने कभी किसी नेता की चमचागिरी की है ?

उ० : नहीं की, इसी लिये खुश हैं और अपनी कुर्सी पर राज कर रहे हैं। यदि चमचागिरी करते तो कुर्सी छिनवाकर राज नारायण बन जाते।

संजय निगम, कानपुर—मैंने करीब दो महीने पहले दीवाना फ्रेंड्स क्लब के लिये अपनी फोटो भेजी थी। अभी तक नहीं छपी है। कितना इंतजार और करना पड़ेगा ?

उ० : बस दो चार सप्ताह का। हमारे इस विभाग पर परिवार नियोजन का असर नहीं है। इसलिए फोटो की आबादी उतनी तेजी से घटती नहीं जितनी तेजी से बढ़ती है।

सरवर अली—बरेली : लोग कहते हैं, चाचा जोरू भतीजा पाजी। क्या यह सच है ?

उ० : दीवाना की प्रतीक्षा करने वाले की हम नींद चुरा लेते हैं। यह तो हम मानते हैं। भतीजे वाली बात आप बताइये।

शाब निसार फारसी—शाहजहांपुर : मेरी शादी होने वाली है। कोई ऐसा सुझाव दीजिये, जो काम आये। और सुखी रहूं ?

उ० : अपने मुंह पर अलीगढ़ का ताला लगा लीजिये जीवन भर सुखी रहेंगे।

ओमिन्द्र पाल—पन्ना : चाचा जी आपका दीवाना देर से क्यों मिलता है ?

उ० : अब तो समय पर प्रकाशित हो रहा है। लगता है कोई पुरानी बात रट रखी है, आपने।

कृष्ण देव पाण्डेय—रामपुर : चाचाजी, क्या मोटू-पतलू, घसीटाराम और पिलपिल, मिलबिल वास्तव में कोई व्यक्ति हैं ?

उ० : जी हैं। कभी हमारे आफिस में आ कर इनसे मिलिये।

रमेश व्यास, त्यागी—इन्दौर : चाचा जी, क्या बात है कि इन्दौर की लड़कियां आपकी बहुत तारीफ करती हैं ?

उ० : शायद उन्हें हकीकत का पता नहीं है। तारीफ किसकी करनी चाहिये, यह हम से पूछिये।

तारीफ उस खुदा की जिसने हमें बनाया,
गोबर के ढेर पर इक घी का दिया जलाया।

प्रेमसुख चोपड़ा, गंगा शहर (बीकानेर)

प्र० : कौन सी वस्तु है जो एक बार हाथ से निकल जाए तो वापस नहीं आती ?

उ० : शबाब ऐसा गया हाथ से कि फिर न मिला।
उसी को ढूंढ रहा हूं कमर झुकाए हुए॥

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

मोटू पतलू

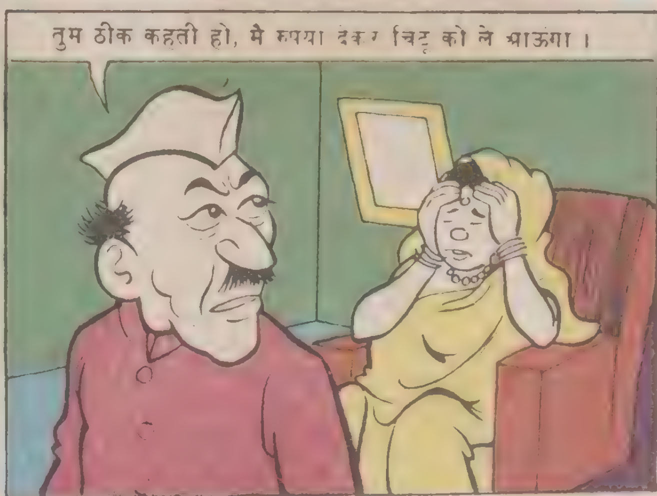
'पिछले दिनों मदारी का भेष भर कर बच्चे उठाने वाला एक गिरोह पुलिस के काबू में नहीं आ रहा था। उस गिरोह के सम्पर्क में आने और उसे पकड़वाने के लिए मोटू पतलू ने भी मदारी का भेष भर लिया था, उन्हीं दिनों घसीटा राम एक आदमी का अटैचीकेस लेकर भागा था, और उसने अटैचीकेस खोलकर देखा था तो उसके अन्दर किसी आदमी की लाश थी। अटैचीकेस से छुटकारा पाने की भाग दौड़ में वह अटैचीकेस समेत एक गटर में जा गिरा था, पास खड़े दो बदमाशों ने घसीटाराम की परेशानी भांप ली थी, और यह अनुमान लगा लिया था कि अटैची-केस में जरूर कोई न कोई मुसीबत बन्द है। अटैचीकेस तो बदमाशों के हाथ न आ सका पर उन्होंने घसीटा राम को गटर से निकाल लिया था और उससे कहा था कि उन्हें सब पता है कि अटैचीकेस में क्या है और उन्होंने घसीटाराम को धमकी दी थी कि यदि उसने उनका कहना न माना तो वे पुलिस को इसकी सूचना दे देंगे। अपनी जान बचाने के चक्कर में घसीटाराम उनके झांसे में आ गया था। इसके बाद घसीटा राम उनके साथ एक सुनसान जंगल में बने एक बंगले पर पहुँचा। उस बंगले में एक खतरनाक गैंग का अड्डा था। वहाँ घसीटाराम को कुछ बच्चे दिए गए। घसीटा राम को यह काम सौंपा गया कि वह उन बच्चों का दिल बहलाये, उनके साथ खेले और इस प्रकार पाले-पोसे कि सब बच्चे उस से हिल जाएं। उन बच्चों में से कोई भी बोल नहीं सकता था। वे बहरे तो नहीं थे, गैंग के सरदार ने कोई दवा खिला कर उन्हें गूंगा बना दिया था।

अब हालत यह है, कि मदारी बन कर भी धक्के खाने के अतिरिक्त मोटू-पतलू के हाथ कुछ नहीं आया है। पुलिस खाक छानती फिर रही है और बच्चे उठाए जाने की वारदातों ने हर तरफ खलबली मचा रखी है। पंद्रह दिन पहले सेठ बलराम का लड़का स्कूल के फाटक से अपहरण कर लिया गया था। उसका आज तक कहीं पता नहीं चला है, आज सेठ जी को एक गुमनाम पत्र मिला है। इसके बाद की कहानी आगे प्रस्तुत है...











बंगले के बच्चे मेरा दम निकालने पर तुलने हुए हैं।
अगूठा दिखा रहा है ? मैं तुझ अपने हाथ दिखाता हूँ बच्चू ।
मैंने भी तेरी खाट खड़ी न कर दी तो मेरा भी नाम नहीं ।
अरे यह क्या अन्धेर है, लगता है मेरी खाट ऐसी खड़ी हुई है कि शायद अब कभी बिछने का नाम नही लेगी ।
चलो देखें, बच्चे इस से कितना हिल गये हैं ?
मेरी हिलती गर्दन मे अन्दाजा लगा लो कि कितना हिल गये हैं।
हमारे साथ आओ। अब तुम्हारे असली काम करने का समय आ गया है।
मदारी बनकर मुझे नचाना है
मदारी बन कर यह तुम्हारा दिल बहलाने के लिये और बढ़िया-बढ़िया बच्चे लायेंगे । तुम्हारा काम इस बच्चे को लेकर लाल कुएँ पर जाना है ।



यह बच्चा तुम से बिल्कुल हिल गया है। तुम इसे लेकर सड़क पर चलोगे तो यह रोएगा नहीं. इसके मुंह से कोई आवाज न निकले ऐसा हमने पहले से ही कर दिया है। अब से थोड़ी देर बाद हम तुम्हें अपने साथ ले जाकर पुराने किले से कुछ दूर छोड़ देंगे. वहां एक लाल कुआं है।
हां है मैं ने देखा है!
तुम इस बच्चे को लेकर वहां जाना. वहां तुम्हें एक आदमी मिलेगा, वह तुम्हें पचास हजार रुपया देगा. तुम वह रुपया लेकर सीधे हमारे पास आ जाना।
जरूर आ जाऊंगा जी।
निर्धारित समय पर गेंग के लोगों ने घसीटा राम को पुराने किले के पास छोड़ दिया।
तुम्हें विश्वास है इस पर ?
तजुर्बा करके देख लेते हैं. रुपया लेकर हमारे ठिकाने पर आ गया तो ठीक है, वर्ना इसे हम ठिकाने लगा देंगे, और अगर पुलिस ने इसे पकड़ कर ठिकाने लगा दिया, तो यह कौनसा हमारा रिश्तेदार लगता है, जो हम इसके लिए रोयेंगे।
पचास हजार रुपया···लाल कुएं पर मिलेगा, मेरा दिमाग खराब है जो तुम्हारे पास आऊंगा. तुम्हें लाल कुयें में धक्का न दे दूंगा।
बच्चे को लेकर पचास हजार रुपया पाने के नशे में घसीटा राम खुशी-खुशी पुराने किले की ओर बढ़ा जा रहा था।
तेरे कान में एक बात बताऊं। पचास हजार रुपया मिलेगा. मजा आ जाएगा।
अब तू मेरे कान में बता. पचास हज़ार रुपये का क्या करेंगे ? पान खायेंगे ?
अरे मैं पान खाने को कह रहा था कमाई, तू कान खा गया मेरा इसे क्या आमपापड़ समझा है तूने ? इतनी जोर से कान पर काटा है कि कानपुर तक मेरे रोने की आवाज़ जा रही होगी।
चलते-चलते रास्ते में घसीटा राम को मदारी का भेष भरे मोटू पतलू मिल गये।
इतने दिनों से कहां थे घसीटा राम ? यह रोनी सूरत क्यों बना रखी है ?
रोयें मेरे दुश्मन. मैं भाड़ में था. जहन्नुम में था, तुम्हें इस से क्या ?


वह तो तुम्हारा घर है, तुम शौक से रहो वहाँ, यह बच्चा किसका है ? क्या तुमने गोद लिया है ?
तुम गोद ले लो इस मुसीबत को और कुएं में डूब मरो।
मुझे एक सेठ ने गोद ले लिया है, लखपति सेठ ने। करोड़पति सेठ ने। कहो, छाती तो नहीं फटी तुम्हारी यह बात सुन कर ?
सब कबाड़ा हो गया। किन मनहूसों की शक्ल देख ली। जब भी रुपया हाथ आने का मौका आता है, यह शुक्र शनीचर बीच में आ टपकते हैं, और रुपया भी थोड़ा बहुत नहीं, पूरा पचास हजार इन मनहूसों को मौत भी तो नहीं आती।
घसीटा राम का दिमाग तो खराब नहीं हो गया है, बच्चा हमें थमा कर छाती पीटता हुआ पुराने किले की ओर चला गया।
सुना है सरकार वहाँ पागलखाना खोल रही है। अपने लिए कोई सुन्दर सी जगह देखने गया होगा।
बड़ा सुन्दर बच्चा है।
वास्तव में बड़ा सुन्दर है।
मोटू-पतलू उस समय पुराने किले के रास्ते पर खड़े थे, तभी वहाँ सेठ बलराम जी आ गये और पतलू की गोद में अपना बच्चा देखते ही पहचान लिया।


ठीक है, मेरा विचार यही था कि मदारियों ने ही मेरा बच्चा उठाया है, यही हैं वे मदारी ।
क्या मतलब है ?
लीजिये, सम्भाल लीजिये । पूरे पचास हजार हैं ।
क्या पचास हजार हैं ?
यहाँ सबके सब पागल हो गये हैं या हमारा दिमाग खराब है ।
मेरा चिंटू मिल गया, रुपया जाये भाड़ में ।
मोटू पतलू ने हैंडबैग खोला तो वह नोटों से भरा हुआ था ।
अरे बाप रे, यह क्या माजरा है ? जो कुछ मुझे अपनी फूटी आंखों से दिखाई दे रहा है । क्या तुझे भी वही दिखाई दे रहा है ?
सेठ बलराम जी आगे बढ़े तो एक पेड़ के नीचे पुलिस खड़ी थी ।
आप ने हमें गैंग के डर के मारे कुछ नही बताया पर खुफिया तौर पर हमने पता लगा लिया था कि बच्चा लौटाने के लिए पचास हजार रुपया लेकर आपको बदमाशों ने यहां बुलाया था ।


कहां हैं वे बच्चे उठाने वाले ?
वे मदारी ? इस सड़क के मोड़ पर, दायें हाथ को खड़े हैं।
देखते ही देखते सड़क के मोड़ पर पहुँच कर पुलिस पार्टी ने मोटू-पतलू को घेर लिया।
लुटेरों, बदमाशों ! अब कहां जाओगे बच कर ?
क्या कर रहे हो हमारी बात तो सुनो।
जो तुम कहना चाहते हो वह यह नोट कर रहे हैं बताओ, तुम्हारा अड्डा कहां है ? बाकी बच्चे कहां हैं ?
कैसा अड्डा ? कैसे बच्चे ?
वह बच्चे जो तुमने उठाये हैं, एक बच्चा लौटा कर पचास हजार रुपया लिया है, बाकी के कहां हैं ?
तुम क्या समझ रहे हो कि हम बच्चे उठाने वाले हैं ? हम मोटू पतलू हैं, हमने मदारियों का भेष भरा हुआ है। हम तो खुद बच्चे उठाने वालों को पकड़ने के लिए घूम रहे हैं, आप हमें नहीं जानते, इन्सपैक्टर कुमार जानते हैं।
हां इन्सपैक्टर कुमार अच्छी तरह जानते हैं उन्होंने ही लंदन जाने से पहले मुझे बताया था यहां मदारियों का एक गिरोह बच्चे उठाने का काम कर रहा है।
आप समझते क्यों नहीं हमारी बात, इन्सपैक्टर कुमार लंदन चले गये, वह कब आयेंगे ?
आठ महीने बाद, चलो हवालात में, वहां तुम्हारी खाल में करेले का मसाला भरेंगे, तब तुम सच-सच उगलोगे।



उधर घसीटा राम पुराने किले के पास लाल कुयें की मुंडेर पर बैठा-बैठा सूख रहा था।
एक घंटा हो गया। कोई नहीं आया पचास हजार रुपया लेकर।
मैं क्या यहां सारी उम्र बैठा रहूंगा। मैं क्या किसी के बाबा का नौकर हूं?
हां, अपने बाबा का नौकर हूं। मेरी अपनी गर्ज है, मैं रुपया लेकर भाग जाऊंगा, यह बात न होती तो मेरा क्या दिमाग खराब है जो मैं यहां दोपहर की धूप में बैठा अपने जिस्म की नानखटाई पका रहा हूं।
शाम होने को आई, तुझे मौत आजायगी घसीटा राम दी ग्रेट पर रुपया लेकर कोई नहीं आएगा, और आएगा भी क्यों, पता नहीं उन सेठ लोगों ने किसी से रुपये लेने भी हैं या नहीं, और मैं भी कैसा दीवाना हूं कि रुपये का नाम सुना तो राल टपकाता हुआ यहां आ गया।
तग आकर घसीटा राम वहां से भाग पड़ा।
मजाक किया है, उन सेठों न मुझे बेवकूफ बनाया है, अच्छी तरह आड़े हाथों लूंगा उन्हें।
गैंग के आदमी कुछ दूरी पर घसीटा राम का इन्तजार ही कर रहे थे, उसे खाली हाथ देख कर सब आगबबूला हो गये।



आगे के हंगामे आगामी अंक में देखिए और पढ़िए ।

खेल खेल में

संजय पाटिल—नागपुर

प्र० : भारत के खिलाफ जो नोरिगा १९७९ में पोर्ट ऑफ स्पेन में दूसरे टेस्ट मैच में कितने विकिट लिये ? और कितने रन दिए ? उस मैच में अपना कितना स्कोर था ? (दोनों पारी में)

उ० : नोरिगा ने पहली पारी में ९५ रन देकर ९ विकेट लिये ! दूसरी पारी में उन्हें कोई विकेट नहीं मिली । बैटिंग में नोरिगा ने पहली पारी में शून्य व दूसरी में २ रन बनाये ।

के० पी० बुआ—काशीपुर

प्र० : कमेन्ट्री पुरुष ही क्यों सुनाते हैं महिलाएं क्यों नहीं ?

उ० : यह एक बहुत दिलचस्प सवाल है । वास्तव में खेलों के क्षेत्र में महिलाओं का पदार्पण बहुत देर से हुआ विशेषकर फील्ड गेम्ज में । अभी हाल तक फुटबाल महिलाओं के लिए वर्जित माना जाता था लेकिन धीरे-धीरे हर क्षेत्र में महिलायें आगे आ रही हैं। महिला क्रिकेट शुरू हो गया है तो वह दिन भी आयेगा जब महिला कमेंटेटरों की मधुर कमेंट्री सुनने को मिलेगी ।

विजय कुमार—नई दिल्ली

प्र० : गारफील्ड सोबर्स ने ६ छक्के किसके विरुद्ध मारे, ये छक्के किस की गेंद पर मारे । क्या यह कोई टेस्ट मैच था या प्रथम श्रेणी का मैच था ?

उ० : एम नैश की गेंद पर ! यह टैस्ट मैच नहीं था प्रथम श्रेणी का मैच था ।

जगदीश लूथरा—चन्द्र नगर, दिल्ली

प्र० : मै भी खेल में हिस्सा लेना चाहता हूं आपकी क्या राय है ?

उ० : आपको शंका किसने है ?

प्रीतम सिंह—रघुबीर नगर, नई दिल्ली

प्र० : १९७८ के भारत और पाकिस्तान क्रिकेट श्रृंखला में कपिल देव का क्या सहयोग रहा तथा कपिल देव का पूरा पता क्या है ।

उ० : कपिल देव पाकिस्तान श्रृंखला में भारत की ओर से सर्वश्रेष्ठ आल राउंडर के रूप में उभरे । वे चण्डीगढ में रहते व पढ़ते है ।

सुरेश खुराना—जीन्द

प्र० : १९७९ की वैस्टइंडीज की सीरीज में बेदी को क्यों हटाया गया ?

उ० : पाकिस्तान मे हार के कारण ।

वीना यादव—

प्र० : कृपया कपिलदेव और विश्वनाथ के घर का पता बतायें ।

उ० : कपिल देव चण्डीगढ में और विश्वनाथ बंगलौर मे रहते हैं इससे आगे हम बता नही सकते क्योंकि पहले कुछ खिलाड़ियों के पते प्रकाशित किये जाने पर उन्हें असुविधा का सामना करना पड़ा । कुछ लोग पता मिल जाने पर भद्दे पत्र लिखते हैं ।

सतीश जैन—जबेरा

प्र० : क्या किसी भारतीय खिलाड़ी ने एक ही पारी में १० विकेट लिये ? यदि हां तो कब, कहां किसके विरुद्ध ?

उ० : जी नहीं । विश्व में केवल जिमलेकर ही ऐसे गेंदबाज हैं जिन्होंने एक पारी में दसों विकटें लीं ।

प्र० : कृपया मुझे क्रिकेटर कपिलदेव तथा दिलीप वेंगसरकर का स्थानीय पता तथा पेशा बताने की कृपा करेंगे ?

उ० : दोनों युनिवर्सिटी के विद्यार्थी हैं ।

केवल प्रकाश—काशीपुर

प्र० : कप्तान बदलने से क्या खिलाड़ी अच्छा खेलते हैं ?

उ० : यह तो स्थिति और नये कप्तान पर निर्भर करता है ।

मुरलीधर—इन्दौर

प्र० : इस समय मजीद खान एवं गावस्कर में श्रेष्ठ कौन है क्योंकि दोनों सलामी बल्लेबाज हैं । इसके साथ आप इन दोनों का टेस्ट रिकार्ड बताने का कष्ट करे ?

उ० : हम तो गावस्कर को ही श्रेष्ठ मानेंगे क्योंकि प्रमाण गावस्कर के बनाये अधिक रन और अधिक शतक हमारे सामने हैं ।

नारायण वाधवानी—रायपुर

प्र० : प्रथम एशियाई खेल और प्रथम आधुनिक ओलम्पिक खेल कब और कहां शुरू हुए थे ?

उ० : प्रथम एशियाई खेल दिल्ली में १९५१ में तथा ओलम्पिक खेल १८९६ में एथेन्स में आरम्भ हुये ।

नीलम कुमार—देवाशन

प्र० : विश्व में सबसे पुराना टेबिल टेनिस टूर्नामेंट कौन-सा है ?

उ० : स्वेथलिंग कप टूर्नामेंट सबसे पुराना माना जाता है !

मो० मोखतार आलम—मीरगंज

प्र० : वीनू मांकड़ अपने टेस्ट जीवन में कितने विकेट लिये थे और कितने रन बनाये थे और उनके शतकों की संख्या क्या है ?

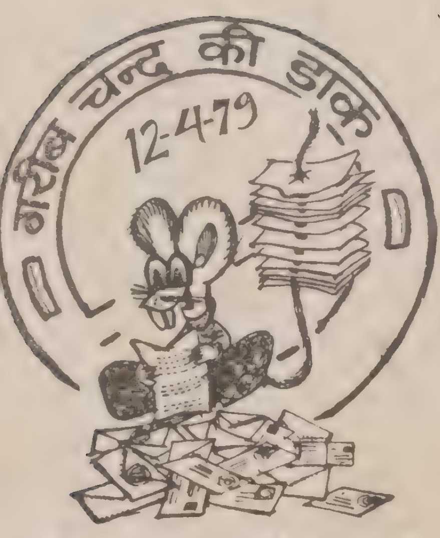
उ० : वीनू मांकड़ ने २१०९ रन बनाये तथा १६२ विकटें ली ।



● एक बैट्स मैन बैटिंग करने आया तो बॉलर से जाकर कहा, 'यार, एक-दो ढीली गेंदे फेंक । मै गेंदें को जोरदार हिट मारना चाहता हूं । आज मेरी मास मैच देखने आई हुई है ।'

बॉलर बोला, 'छोड़ यार । पागल हुआ है । इतनी दूर से तू निशाना नहीं मार सकेगा ।'

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२



सुशील 'छातवाल'—मण्डी गोबिन्द गढ़ : अगर स्त्री बन्द लिफाफा है तो फिर पुरुष क्या है ।

उ० : पुरुष बस लिफाफा है ! खाली लिफाफा ! आपने सुना भी होगा लोग कहते हैं तू आदमी है या लिफाफा ?

अशोक बावला—पानीपत : मेरी कमीज फट गई है मैं क्या करूं ?

उ० : हाथ में कटोरा लेकर चलें । हो सकता है कोई तरस खाकर उसमें पैसे ही डाल दे ।

एस० बोगटी 'सानू'—अमृतसर : गरीबचन्द जी, क्या आपकी शादी हो गई है या आप भी मेरी ही तरह इकलौते हैं ?

उ० : बम्बई में हेमा मालिनी के कपड़ों की आलमारी में रहने वाली एक चुहिया से मेरी शादी की बातचीत चल रही है ।

संदीप सिंह—दादरी : मुझको घर वाले यह कहते हैं कि तू पढ़, पर मेरा जी पढ़ने में नहीं लगता है । मेरा जी खेलने में लगता है । अब यह बताओ कि मैं क्या करूं ।

उ० : मैंने आज तक जितने भी घरों में अपनी कुतरन विद्या का चमत्कार दिखाया वहां पाया कि सबको यही शिकायत है कि पढ़ने में जी नहीं लगता । लेकिन पढ़ना ही पड़ता है क्योंकि मजबूरी का नाम स्कूल है ।

शरद जैन—दिल्ली : गरीब चन्द जी, मैं बिल्ली लेकर दीवाना के दफ्तर में आ रहा हूं । आप भागेंगे तो नहीं ।

उ० : ऐसी गलती मत कीजिये । दीवाना के दफ्तर में सब कुत्ते की तरह काट खाने वाले लोग हैं ।

अशोक जौहर 'गगन'—देहरादून : गरीबचन्द जी, आपने जवाब देने में देरी कर दी है क्या जसलोक के दौरे पर तो नहीं पहुंच गये थे ।

उ० : बात यह हुयी कि मैंने एक दिन सिलबिल-पिलपिल के टी. वी. पर सुना कि भारत चूहों की खाल से सामान बना कर निर्यात कर रहा है । बस उसके बाद बिल में ही पड़ा रहा कि कहीं मेरी नर्म चमकदार खाल पर उनकी नजर न पड़े । यह पक्का विश्वास होने पर ही कि उन दोनों के कानों में वह खबर नहीं पड़ी है बाहर निकला हूं ।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

चना कुरमुरा

● एक साधु ने कार पार्क के पास कुटिया बनाई। लोग उसकी कुटिया के अगल-बगल में भी कार-स्कूटर खड़े करने लगे तो उसने बोर्ड लगवाया, 'यहां गाड़ियां खड़ी करना मना है । उल्लंघन करने वाले को श्राप दिया जायेगा ।'

● एक—आजकल सब लड़कियां कॉलिज की लेकचरर बनना चाहती हैं । समझ नहीं आता क्यों ?

दूसरा—बातें बनाने की नौकरी कौन लड़की नहीं चाहती ?

● एक बार खिलाड़ियों का एक दल प्रिंसीपल से मिला और शिकायत की कि स्कूल में खेल-कूद की सुविधाओं की तरफ सम्बन्धित अध्यापक ध्यान नहीं देते हैं । खेल का सामान टूट या फट जाता है तो कोई मरम्मत नहीं होती आदि । प्रिंसीपल ने उन्हें आश्वासन दिया वह खुद इसकी जांच करेंगे । उन्हें खेल-कूद के बारे में कम ज्ञान था लेकिन वे स्वयं इन्सपेक्शन करने निकले । बास्केट बॉल कोर्ट में पहुच कर उन्होंने नैट देखा और चपरासी से बोले, 'देखो नैट नीचे से फट गया है फौरन सुआ धागा ले आओ और सी कर ठीक कर दो ।'

● मैं ये क्यों न बना ?

रेलवे गार्ड—पिता जी ने लाल झंडी दिखा दी ।

पायलट—मां बेटे को हाथ से उड़ने नहीं देना चाहती थी ।

बायलर इंजीनियर—बड़े भय्या सुनते ही उबल पड़े ।

● पहला—पुलिस बिल्लू नाम के एक आंख वाले अपराधी की तलाश में है ।

दूसरा—अच्छा ! दूसरी आंख का क्या नाम है ?

● एक बैट्स मैन की शादी हुयी । बीबी क्रिकेट के बारे में ज्यादा नहीं जानती थी । एक दिन वह खेल का सामान बेचने वाली दुकान पर पहुंची और दुकानदार से बोली, 'मुझे सौ रन चाहियें ।'

दुकानदार हैरान हुआ, 'सौ रन ?'

क्रिकेटर की बीबी, 'हां हां सौ रन'। मुझे पति को जन्म दिवस पर उपहार देना है । वह हमेशा कहते रहते हैं काश मेरे भी सौ रन होते ।'

● एक व्यक्ति—मेरी बीबी इतनी मोटी है कि जब वह गिर जाती है और उठने कोशिश करती है तो वह इतनी झुलनियां खाती है कि झूलते-झूलते बच्चे की तरह सो जाती है ।

● घनश्याम जी हॉकी कमेंट्री सुनने के बड़े रसिया थे । मांट्रियल में जब ओलम्पिक्स हो रहे थे तो वहां दिन और रात होने की वजह से कमेंट्री रात को आती थी । भारत और आस्ट्रेलिया का मैच सुबह पांच बजे हो रहा था। पांच बजे अंधेरा ही रहता था । घनश्याम जी चार बजे ही उठे । चाय बना कर पी और पांच बजे कमेंट्री सुनने लगे । भारत एक गोल के मुकाबले छः गोलों से बुरी तरह हारा । घनश्याम जी, रोने लग गये और खिलाड़ियों को बुरा-भला बकने लगे तो बीबी जगकर बोली, इसमे हमारे खिलाड़ियों का क्या कसूर है जी ? उनको रात को खेलने की आदत नहीं है । यहाँ तो दिन को ही खेली जाती है और वहां बेचारों से रात को खिलाया जा रहा है ।


फैण्टम –
डियाना का अपहरण
वो आदमी जो तुमसे मिलने आया था, कौन था ? जल्दी बताओ !
अन्नदाता, यह सफर से बहुत थकी है, जवाब नहीं दे सकती ।
ठीक है, दासियों को बोलो इसका ध्यान रखें, जब यह आराम कर ले मेरे पास ले आओ ।
मुझे यह आदमी चाहिये ।
मुझे माफ कीजिये ।
जैसे एक स्वप्न हो···डियाना को प्यार से नहलाया जाता है···
वो कई घंटे सोती है···
घबराओ मत, यह तुम्हारा खाना है ।
मेरे कपड़े कहां हैं ?
धुलने गये हैं ।
मुझे यह अजीब कपड़े क्यों पहनाये हैं ?
मेरी इच्छा··· जनरल तुमसे सवाल करना चाहते हैं ।
मैं तुम्हें सुन्दर बना कर उन्हें खुश करना चाहता हूं···
बहुत, बहुत धन्यवाद !
अन्नदाता के सामने घुटने टेको !
नहीं, मैंने बहुत सह लिया, और मैं चाहती हूं कि यह गधा मेरे कपड़े मुझे वापिस दे दे
घुटने टेको ।
इसे खड़ा रहने दो, मुझे दमदार औरत पसन्द है ।
मुझे पता नहीं था कि डिप्टी डायरेक्टर इतनी सुन्दर है, तुम्हारा ख्याल था मेजर ?
मेरी कोशिश आपको हरदम खुश करने की रहती है ।



पहचानिये प्रतियोगिता

इनाम 10 रुपये



आपको यह बताना है कि यह किस फिल्म का सीन है ।

अपने हल केवल पोस्टकार्ड पर ही लिख कर भेजें– एक से ज्यादा सही हल मिलने पर निर्णय लाटरी द्वारा किया जायेगा-सं०

अन्तिम तिथि १२ मई १९७९

क्यों और कैसे

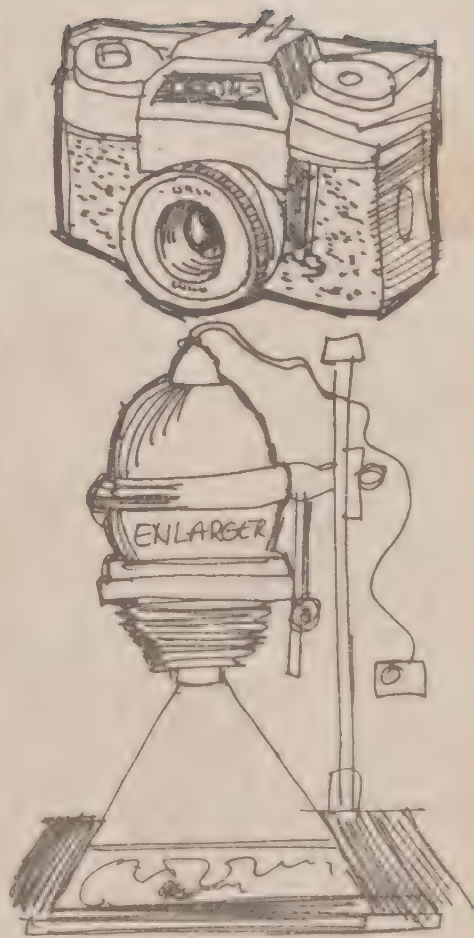
प्र० : फोटोग्राफी का आरम्भ संसार में कब हुआ ? फिल्म को धोया तथा प्रिन्ट कैसे किया जाता है ?

उ० : फोटोग्राफी का आरम्भ संसार में लगभग सन् १८२६ में हुआ था जबकि जोसेफनिपी नामक व्यक्ति ने बिटुमिन के घोल की सहायता से एक स्थायी फोटो बनाई थी । सन् १८३९ में लुई डागुरे तथा विलियम फोक्स टालबोट ने व्यावहारिक फोटोग्राफी का तरीका खोज लिया था । सन् १८८८ में जार्ज इस्टमैन ने साधारण कैमरे की बिक्री आरम्भ कर दी थी । इस कैमरे द्वारा फोटो खींचना आसानी से सीखा जा सकता था और इसीलिए इस कैमरे के बनने से फोटोग्राफी का शौक बहुत प्रचलित हो गया। सबसे पहले बहुत छोटे कैमरे का नाम 'लीका' था इस में आजकल सिनेमा की रील बनाने में काम में लाई जाने वाली ३५ मी० मी० की फिल्म डाली जाती थी । सन १९४७ में श्री एडविन लैंड ने 'पोलारोइड' कैमरा निकाला । इस आधुनिक कैमरे से न केवल फोटो खींचा जाता है बल्कि ये कैमरा एक मिनट से भी कम समय में उसे धोकर प्रिन्ट भी कर देता है ।

फोटोग्राफी के माध्यम से ही संसार में होने वाली हर घटना तथा हर वस्तु के बारे में पूरी-पूरी जानकारी पुस्तकों, समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं इत्यादि में पाई जाती है । परन्तु फोटोग्राफी को केवल एक व्यवसायिक धंधा कहना या समझना पूर्णतया गलत होगा । ये संसार भर में फैला हुआ एक बहुत ही अच्छा तथा प्रचलित शौक है । कोई भी व्यक्ति घूमने जाने पर यादगार के रूप में वहाँ की फोटो अपने पास अवश्य रखना चाहता है। इसी प्रकार जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं की याद भी फोटो द्वारा ही संजो कर रक्खी जाती है । अधिकतर परिवार अपने फोटो एलबमों को एक अमूल्य खजाने के समान मानते हैं ।

फोटो कैमरे के एक बटन को दबाकर ली जाती है । इस बटन के दबने से कैमरे के शीशे के लैंस पर से ढक्कन हट जाता है तथा प्रकाश भीतर जाकर फिल्म पर चित्र अंकित कर देता है । फिल्म पारदर्शी प्लास्टिक की लम्बी कत्तर के समान होती है, जिस पर इमलशन नामक घोल लगा रहता है । ये इमलशन घोल सिल्वर ब्रोमाइड तथा जिलेटिन में मिले आइयोडीन के बारीक कणों से बना होता है । सिल्वर साल्टस पर प्रकाश पड़ने रसायनिक प्रतिक्रिया द्वारा बदलाव आता है । ये बदलाव प्रकाश पड़ने के अनुपात में होता है और इससे ही फिल्म पर चित्र अंकित होता है ।

अब ये अंकित छवि रसायन मिले सिल्वर साल्टस के सम्पर्क में लाई जाती है इसे फिल्म को धोना या डवलप करना कहा जाता है । इसके बाद अतिरिक्त रसायन हटाने के लिए तथा रसायनिक प्रतिक्रिया रोकने के लिए इन फिल्मों को धो दिया जाता है । फिर फिल्म को सोडियम हाइड्रो-सलफाइट से ट्रीट किया जाता है । परन्तु ये



सब करने के बाद भी हमें फोटो उल्टी प्राप्त होती है । दृश्य के प्रकाशमान हिस्से काले दिखाई देते हैं तथा कम प्रकाशमान हिस्से लगभग पारदर्शी हो जाते हैं। इस उल्टी छवि को 'नेगेटिव' कहते हैं ।

नेगेटिव का पोजीटिव छवि प्रिन्ट करके बनाया जाता है । प्रिन्टिंग करने के लिए नेगेटिव को हल्के फिल्म जैसे घोल लगे प्रिन्टिंग कागज पर रक्खा जाता है और इस पर एक तेज प्रकाश डाला जाता है और जैसा पहले बताया गया है उसी प्रकार नेगेटिव पर से छवि प्रिन्टिंग पेपर पर अंकित हो जाती है और ये छवि नेगेटिव से उल्टी होने के कारण फिर हमें आरम्भिक दृश्य प्राप्त हो जाता है ।

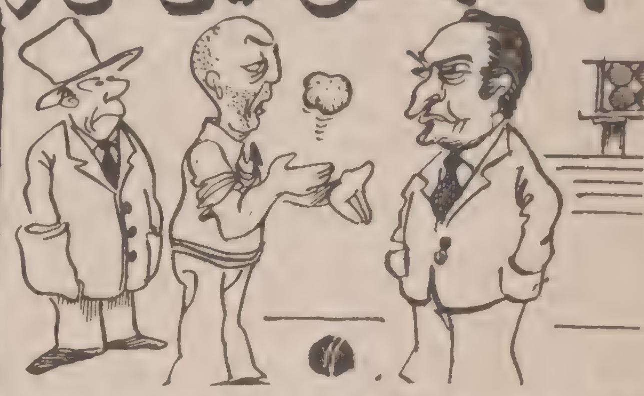


क्यों और कैसे
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

हमारे नेता पैकर सीरीज में



मोरार जी देसाई इस बात पर अड़ जायेंगे कि वह उसी बालर की गेंदे खेलेंगे जो शराब न पीता हो और न ही मीट खाता हो।



चरण सिंह बालिंग करेंगे तो बाल की जगह बागपत में पैदा हुये आलू फेंकने की जिद्द करेंगे। ऐसा करने से वह कहेंगे कि किसानों को प्रोत्साहन मिलेगा। बीच मैदान में पैकर और चरण सिंह की बहस होगी।



अटल बिहारी वाजपेयी जब बैटिंग करने जायेंगे तो आधा घटा खेल रुका रहेगा क्योंकि वह पहले विकेट कीपर और क्लोज इन पोजीशन में खड़े खिलाड़ियों से मैत्री सम्बन्ध स्थापित करने की कोशिश करेंगे।



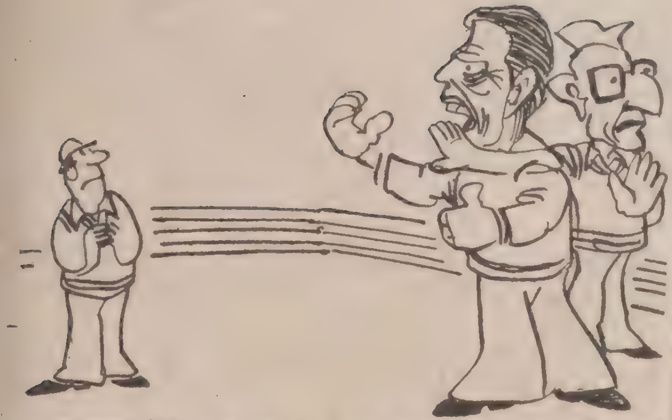
बारहवें खिलाड़ी देवीलाल--देवीलाल बैटिंग के लिये जाते ही घोषणा कर देंगे कि वह पहले किसान हैं फिर बैटसमेन। इसलिये बैटिंग के लिये वह बल्ले की जगह फावड़े या खुरपी का प्रयोग करेंगे।



श्री यशवन्त राव चवन नें आज तक कोई फैसला करने में अपनी असमर्थता का खूब प्रदर्शन किया है। वहां भी चवन बैटिंग करने जायेंगे तो बल्ला टेक कर बैठ जायेंगे और दो घंटे यही सोचते रहेंगे कि अम्पायर से गार्ड लूं या न लूं।



श्री राजनारायण जब क्लीन बोल्ड हो जायेंगे तो बोल्ड करने वाले बेटसमेन के विरुद्ध आरोप लगायेंगे कि संजय और गीता का खून करने वाले बिल्ला रंगा नहीं हैं बलिक यही हैं। मैं इसके सबूत पेश कर सकता हूँ। यह आर. एस. एस. का भी सदस्य है।



फील्ड बैटिंग ठीक तरह होगी ही नहीं। कप्तान मोरारजी एक फील्ड सैटिंग करेंगे। उप-कप्तान स्टीफन दूसरे तरह की फील्ड सैटिंग करेंगे। एक फील्डर को पास बुलायेगा दूसरा दूर जाने को कहेगा। खूब शुगल रहेगा।



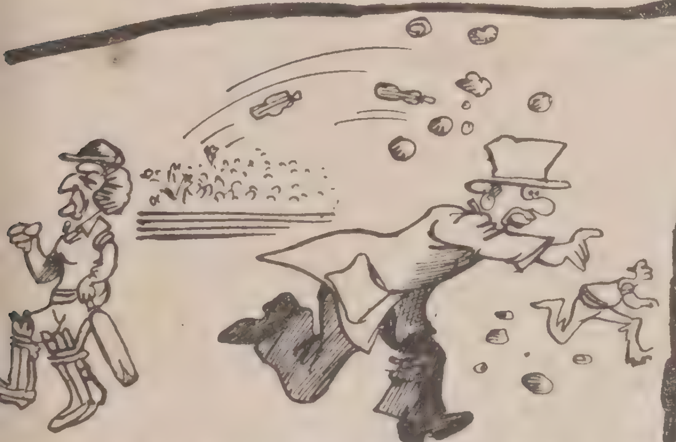
एम. जी. रामचन्दन कहेंगे कि जब हिन्दी में कमेंट्री हो रही होगी वह रन नहीं बनायेंगे जैसे ही इंगलिश कमेंटेटर की बारी आयेगी वह खेलना शुरू कर देंगे।



ज्योति बसु विरोधी बैटसमैन की गेंद बाऊण्ड्री के पार चली जाये तो मांग करेंगे कि सैंचुरी बनाने वाले बैटसमैनों के रन पेकर सीरीज के खाते में डालने चाहियें। उन्हें सौ रन बनाने पर केवल दस रन दिये जायें। वर्ना क्रिकेट में भी रनों का पूंजीवाद शुरू होने का खतरा है।



कर्पूरी ठाकुर मांग करेंगे कि इनिंग्ज में जितने चौक्के और छक्के लगे हैं उसमें से २५ प्रतिशत पिछड़ी जातियों के बैटसमैनों के नाम कर दिये जायें चाहे उन्होंने लगाये हों अथवा न लगाये हों।



श्रीमती इन्दिरा गांधी जब आउट होंगी तो दर्शकों में बैठे उनके समर्थक अम्पायर के निर्णय के विरुद्ध तोड़-फोड़ और दंगा फसाद शुरू कर देंगे और उस दिन का खेल वहीं बन्द कर देना पड़ेगा।



भारत के तूफानी गेंदबाज जार्ज फर्नाडीस की जब एल. बी. डब्ल्यू की अपील नामजूर हो जायेगी तो वह अम्पायर को धमकी देंगे कि पेकर सीरीज को जब सरकार अपने हाथ में ले लेगी तो तुमको देखूंगा मैं।

एक ही झटके ने

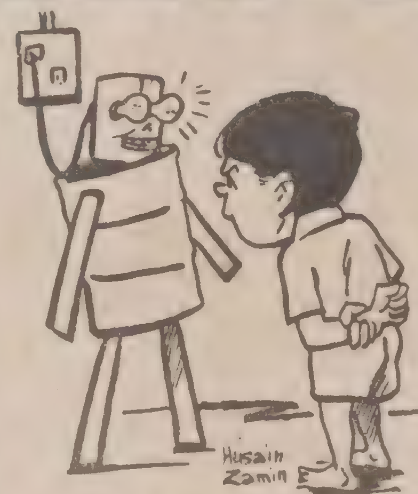
वीणा गुप्ता

छोटे लाल देखने में भले ही छोटा था पर उसकी अक्ल के सामने बड़े-बड़े पानी भरते थे। बात की खाल निकालना तो उनके बांये हाथ का काम था। एक बार जो देख लेता उसे कभी नहीं भूलता और एक बार जो सोच लेता उसे पूरा करके ही दम लेता। चाहे वह काम आसमान से तारे तोड़ने का ही क्यों न हो। हां, यह बात और है कि वह अपनी जिद पूरी करने के लिए अपने कमरे को आसमान मानकर नकली तारे लटका कर उन्हें ही तोड़ लें।

एक बार छोटे लाल अंग्रेजी फिल्म देखने गया। वैसे अंग्रेजी उसकी समझ में अधिक नहीं आती थी फिर भी जोड़-तोड़ करके गुजारे लायक समझ ही लेता, वह फिल्म वैज्ञानिक पृष्ठ भूमि पर आधारित थी। उसमें दिखाया गया था कि वह वैज्ञानिक अपने ज्ञान को मनमाने ढंग से प्रयोग करने लगा। उसने एक लोह पुरुष बनाया और उससे अमानवीय कार्य करने लगा। कभी बैंक में डाका डलवाता तो कभी किसी का खून करवाता। मतलब यह कि वह वैज्ञानिक अपने द्वारा निर्मित उस लोह पुरुष की सहायता से संसार का सबसे शक्तिशाली आदमी बनने के स्वप्न देखने लगा। अन्त में वह अपनी भूल से उसी लोह पुरुष द्वारा मारा गया।

फिल्म देखते-देखते छोटे लाल के मन में भी वैसा ही लोह पुरुष बनाने की इच्छा पैदा हुई, वह सोचने लगा कि वह किसी तरह वैसा लोह पुरुष बना सका तो उसके वारे-न्यारे हो जायेंगे। इसलिए वह उस लोह-पुरुष की बनावट और उसे प्रयोग करने की विधि को बड़े ध्यान से देखने लगा, लोह पुरुष के लाभ तो उसने देखे परन्तु गलत प्रयोग कर कुपरिणाम भी हो सकता है इस ओर उसका ध्यान ही नहीं गया।

फिल्म देखने के बाद घर आते ही छोटे लाल ने लोह पुरुष बनाने का सामान जुटाना आरम्भ किया। टांगों और हाथों के लिए वह टीन के लम्बे-लम्बे गोल डिब्बे बाजार से ले आया। धड़ के लिए घर में से ही एक



पीपा, निकाल लिया। एक छोटी सी पीपी उसने सर के लिए अलग से रख ली, मोटा-मोटा सामान जुटाने के बाद वह आंखों के लिए बल्ब खोजने लगा। काफी तलाश करने पर उसे एक बल्ब तो घर में ही मिल गया। दूसरा उसे बाजार से खरीद कर लाना पड़ा।

अच्छा मुहूर्त देखकर छोटे लाल ने लोह पुरुष का निर्माण करना आरम्भ कर दिया।

सबसे पहले दो लम्बे डिब्बों को फर्श पर पास-पास रखा। फिर पीपी को उन दोनों डिब्बों पर अच्छी तरह टिका दिया। उसी के ऊपर छोटी पीपी को रख दिया। अब हाथों के स्थान पर डिब्बे लगाने की समस्या सामने आ खड़ी हुई। छोटे लाल ने इस बात पर कुछ देर विचार किया। फिर वह दो पतले-पतले डंडे लाया और उन्हें इन डिब्बों में फंसाया। डंडों के दूसरे सिरों को उसने पीपे के दोनों ओर छेद करके उसमें फंसा दिया।

जैसे-जैसे लोह पुरुष के विभिन्न अंग बनते जा रहे थे वैसे-वैसे छोटे लाल की खुशी भी बढ़ती जा रही थी।

अन्त में छोटे लाल ने सिर रूपी पीपी में सामने की ओर बल्बों के अनुरूप दो गोल छेद किये और उनमें उन्हें फिट कर दिया।

यह सब पूरा होते ही छोटे लाल को अपनी कल्पना पूरी होती दिखाई दी। वह अपनी सफलता के नशे में झूमता हुआ उसी फिल्मी तरीके से अपने लोह पुरुष को आदेश देने लगा।

'लोह पुरुष आगे बढ़ो।'

'लोह पुरुष पीछे मुड़ो।'

'लोह पुरुष अपना हाथ उठाओ।'

इस तरह लोह पुरुष को कई आदेश दिये परन्तु वह तथाकथित लोह पुरुष टस से मस नहीं हुआ। उसका कोई भी भाग हिला तक नहीं। तभी छोटे लाल को ध्यान आया कि फिल्म वाले लोह पुरुष की आंखों में लगे बल्ब तो जल रहे थे। यह बात मन में आते ही उसने दोनों बल्बों को तारों द्वारा कमरे में लगे बिजली के प्लग से कनेक्ट कर दिया, स्विच ऑन करते ही लोह पुरुष की आंखों के स्थान पर लगे दो बल्ब जल उठे। यह देख कर छोटे लाल की आंखों में भी रोशनी चमक उठी।

छोटे लाल ने फिर से लोह पुरुष को पहले की तरह आदेश देने आरम्भ किये परंतु अब भी उस पर कोई असर नहीं हुआ। काफी देर तक चीखने-चिल्लाने के बाद भी लोह पुरुष में किसी तरह की हरकत नहीं हुई तो छोटे लाल ने आग बबूला होकर लोह पुरुष के सिर के स्थान पर लगी पीपी को जोर से थप्पड़ मारते हुए कहा, 'अब तो……।'

मुंह की बात पूरी होने से पहले ही छोटे लाल बुरी तरह चीख पड़ा। पीपी को छूते ही उसके सारे शरीर में करेन्ट दौड़ गया। यह तो शुक्र था कि हाथ लगते ही पीपी तथा डिब्बे इधर-उधर बिखर गये और बिजली का तार प्लग से निकल गया। ऐसा नहीं होता तो उस लोह पुरुष के खण्डन के साथ-साथ छोटे लाल भी ऊपर पहुंच जाता। फिर भी हाथ की जगह लगा हुआ गोल डिब्बा उछल कर उसके पांव पर जा लगा।

बिजली के शॉक और पांव की चोट के कारण छोटे लाल बुरी तरह घबरा गया। सहमे और कांपते होंठों से छोटे लाल स्वतः ही बोल उठा, 'लोह पुरुष द्वारा नहीं अपने हाथ-पांव से ही मेहनत करके बड़ा आदमी बनूंगा।'

इस तरह लोह पुरुष के एक ही झटके ने छोटे लाल का मुफ्त में बिना मेहनत किए बड़ा आदमी बनने का सपना मिट्टी में मिला दिया। ●

परोपकारी


अरे मोहन भैया, सुबह-सुबह पार्क में बैठ के क्या कर रहे हो ?
और कल भी तो तुम तीन-चार बजे घर गये थे।
हां हां। आप की कृपा से।
क्यों क्या हुआ ? मैंने तो तुम्हें सिर्फ बिना बीवी को जगाये घर घुसने की सलाह दी थी।
सो ही तो !
मैंने बत्ती नहीं जलाई, जूते उतार कर अन्दर गया, और अन्धेरे में ही कपड़े बदले पर ज्योंही पलंग पर बैठा बीवी जाग गई, और कहने लगी कि इतनी सुबह-सुबह क्यों उठ गए हो ?
इसलिए मुझे कहना पड़ा कि आज मुझे दफ्तर में काम है।
इसका मतलब कि वह नहीं जान पाई कि तुम रात भर घर से बाहर रहे।
जी हां, और अब दिन भर भी बाहर ही रहना होगा।
THE NATIVE


बात-बे बात की
अरे रामू, कहाँ मर गए थे ? मै कब से तुम्हे पुकार रहा हूं।
साहब, मै तो रसोई मे चाय बना रहा था मुझे आपकी आवाज सुनाई नहीं पड़ी !
तो बेवकूफ, वहीं से नहीं बोल सकते थे कि तुझे मेरी आवाज नहीं सुनाई पड़ रही है ?

रोजी

शलेन्द्र-चंचल-धामपुरी

हमारे एक मित्र का
काफी नाम है
और काफी काम है
एक दिन मिलने गए
तो हमें देखते ही बोला—
कुछ उदास लगते हो
एकदम निराश लगते हो
मनहूस क्यों हो
मित्र—
इतने मायूस क्यों हो ?'
मैंने कहा—
'बन्धु, आप तो समझदार हैं
होशियार हैं
अब आपसे क्या छुपाएँ
जो असली किस्सा है
बेरोजगारी का कष्ट
इसी का हिस्सा है
मेरा जीवन
नष्ट होने से बचाइए
प्लीज—
मुझे रोजी दिलाइए !'
कुछ सोचकर कहा उसने।
'बस, यहीं बर्बादी हो गई
गुरू, तुम कुछ लेट हो गए—
अब तो रोजी की—
शादी हो गई !'

परिणति

आजाद राम पुरी

मंत्री महोदय के,
सघन दौरे ने,
उनके चमचों में,
इतना उत्साह जगा दिया,
कि उन्हों ने,
शुभागमन्' का साइन बोर्ड,
सबसे पहले,
मार्ग में नगर प्रवेश से पूर्व,
पड़ने वाले शमशान घाट पर ही—
लगा दिया ॥

भारत के पक्षी एलबम सीरीज



हम इस कॉलम में प्रति सप्ताह भारत के एक पक्षी का सुन्दर चित्र सहित परिचय देंगे। आप इन्हें काट कर अपने व दोस्तों के मनोरंजन व ज्ञान के लिये एलबम बना सकते हैं।

काला तीतर

कोई जमाना था जब काले तीतर भारत उपमहाद्वीप में प्रायः सब जगह पाये जाते थे। यह पक्षी छोटी मुर्गी के आकार का होता है। सिर व पीठ तथा पंखों पर चकत्तों और धारियों का आकर्षक डिजाइन होता है। गले व कान के नीचे गहरे रंग के चकत्ते से होते हैं। आजकल यह बहुत कम संख्या में और कहीं-कहीं पाये जाते हैं। काले तीतरों का शिकार बहुत स्वादिष्ट होता था। बड़े-बड़े होटलों में मीनू पर भी यह हुआ करता था इसलिए काले तीतर पर शिकारियों की विशेष कृपा रही। १९७२ में सरकार ने काले तीतर के शिकार पर प्रतिबन्ध लगा दिया परन्तु इनका शिकार चोरी छिपे होता रहा और अब तक होटलों में चोरी से इसका मांस ग्राहकों को दिया जाता है। सरकार ने शूटिंग पर पाबन्दी लगाई थी परन्तु लोग इसे जाल द्वारा पकड़ते हैं क्योंकि बन्दूक के कारतूस वैसे ही बहुत महंगे हैं।

काले तीतरों पर जमीनों में कीटाणु नाशक दवाओं के अधिक प्रयोग का भी प्रभाव पड़ा है। तीतरों के अंडों का खोल रसायनिक प्रभाव से पतला हो गया जिससे वह जल्दी फट जाते हैं या बच्चे बनते ही नहीं।

यही हाल रहा तो हम काले तीतर के दर्शन केवल चित्रों द्वारा ही कर सकेंगे।

पहलवानी

उन्होंने
मुगदर घुमाना
बंद किया है
क्योंकि—
उनकी पत्नी ने
बेलन घुमाना जो—
शुरू कर दिया है !

कृपा

हमने नौकर से पूछा—
तुमको हम
बहुत डांटते हैं
तुम चुप रहते हो
माजरा क्या है ?'
वह बोला—
'सब पत्नी की कृपा है।

बन्द करो बकवास


हमको तुमसे प्यार है तुम पे दिल निशार है तुम क्या मिल गए मेरी दुनिया बदल गई
बन्द करो बकवास, मैं जानती हूं तुम मेरे लिए नहीं मेरे फोन के लिए रोज आती हो।
मुहब्बत की झूठी कहानी पे रोये...
बन्द करो बकवास, तुमने कैसे सोच लिया कि मैं तुम्हें 'लंदन' ले जा रहा हूं? मैंने तो 'लंदन' ढाबा कहा था।
आज की रात बड़ी शोख बड़ी नटखट है, आज तो तेरे बिना नींद नहीं आयेगी।
बन्द करो बकवास, तो तुम यह गाना अपनी बोतल के लिये गा रहे थे मेरे लिए नहीं।
THE NATIVE

पृष्ठ १३ से आगे

'जी हां···।'

'तुम्हारे पिताजी कहां हैं ?'

'वह तो बाहर गए हैं···।'

'क्या करते हैं ?'

इंस्पेक्टर हैं।'

'तो तुम्हारे घर में और कोई मर्द नहीं है ?'

'है क्यों नहीं···' विनोद बोला, 'हमारे मामा हैं···फूफा हैं···दादाजी हैं।'

'तो वह क्या करते रहते हैं ? हमने तो एक दिन भी किसी को राज-मजदूरों की निगरानी करते नहीं देखा, एकदम निश्चित होकर बैठ जाने से कोई मकान बनता है··· तुम नहीं जानते आजकल के राज-मजदूरों पर भरोसा करने से कितनी हानि होती है··· मेरे सामने बोरियां की बोरियां चुराकर ले जाते हैं···लेकिन उन्हें कौन रोक सकता है।'

'बोरियां चुराकर ले जाते हैं' विनोद ने आश्चर्य से दोहराया।

'हां बेटा···तुम बच्चे हो नहीं समझोगे··· लेकिन जब तुम्हारे पिताजी टूर पर से आएं तो उन्हें कहना मुझसे जरूर मिलें।'

'बहुत अच्छा।'

विनोद अजनबी को नमस्ते करके सीधा घर चला आया···मां कहीं पड़ोस में गई थीं वह चुपचाप कमरे में आकर लेट गया और बोरियों की चोरी के बारे में सोचने लगा··· यह खबर सुनकर उसके दिल को धक्का-सा लगा था···वह अब बिल्कुल बच्चा भी नहीं था—वह जानता था कि मकान उसकी मां के लिए पिताजी बनवा रहे हैं···सारी चीजों में रुपया पिताजी का ही लगता है···और राज-मजदूर बोरियां चुराकर ले जाते हैं··· क्या उसके पिताजी का रुपया यूंही लुटने के लिए है ? क्या पिताजी महीनों बाहर रहकर इसीलिए रुपया कमाते हैं कि मामा चुरा लें···दादाजी बचाकर बुआ को दे दें···मां छिपकर मामा और मामी को दें···और राज-मजदूर पिताजी के पैसों से खरीदी हुई सीमेंट की बोरियां चुराकर ले जाएं—क्या किसी को भी हमारे पिताजी के पैसे से सहानुभूति नहीं है ? किसी को भी उनसे प्यार नहीं···इसमें किसी का दोष नहीं ? दोष तो स्वयं पिताजी का है···वह क्यों ऐसे लोगों पर भरोसा कर लेते हैं जो भरोसा करने योग्य नहीं हैं—वह क्यों अयोग्य और स्वार्थी लोगों को अपना सबकुछ सौंप देते हैं ? सच्ची बात तो यह है कि स्वयं पिताजी को ही अपने पैसे से प्यार नहीं है।

विनोद ने सोचा और उसे पिताजी पर गुस्सा आने लगा।

फिर उसने सोचा ऐसे कब तक चलेगा··· अब उसे अपने छोटे होने पर बहुत ताव आया···काश, वह बड़ा होता और पिताजी को ऐसा करने से रोक सकता···उनकी अधिक-से-अधिक सहायता करता।

थोड़ी देर बाद मां आ गई और विनोद ने उस अजनबी की कही बातें दोहरा दीं··· मां सुनकर आग-बबूला हो गई और उन्होंने दादाजी की टांग ली।

'आपको अपने बेटे से···बेटे की कमाई से जरा भी सहानुभूति नहीं···बस दिन-भर पलंग पर बैठे-बैठे हुक्का गड़गड़ाने से काम है।'

'तो क्या करूं ?' दादाजी झुंझलाकर बोले 'क्या तुम लोगों के लिए अपनी जान



दे दूं ? बुढ़ापे की हड्डियां हैं···दिन-भर तो लगा रहता हूं···एक मिनट का भी तो अवकाश नहीं···मेरे जिम्मे कोई एक काम है ?'

'कुछ मत कीजिए···बस यूंही बैठे रहिए···आपका क्या जाता है ? दिल तो उसका दुखता है जिसकी रकम बर्बाद होती है···आपको कुछ पता भी है कि जिन राज-मजदूरों पर तुमने भरोसा किया है वह लोग कितनी चोरी करते हैं···बोरियां गायब करते हैं—।'

'कौन गधा कहता है···उन जैसे ईमानदार और शरीफ आदमी चिराग लेकर भी ढूंढ़ने से नहीं मिलेंगे।'

'जो गधे देखते हैं वही गधे कहते हैं··· जरा पास-पड़ोस वालों से मालूम कीजिए।'

'पास-पड़ोसवाले तो सदा बेपर की उड़ाया करते हैं·········साफ बात है कि मेरी हड्डियों में अब इतना गूदा नहीं है कि कड़कती धूप में खड़ा होकर अपनी खोपड़ी पिघलाऊं।'

उसी शाम को विनोद के पिताजी टूर से लौट आए···अब के लिए नहीं लौटे किंतु शायद हमेशा के लिए आ गए क्योंकि उनकी नौकरी समाप्त हो गई थी···यह बात सबके लिए चिंता का कारण बन गई···लेकिन पिताजी ने यह कहकर सबको ढाढस बंधाई कि जल्दी ही उन्हें कोई दूसरी नौकरी मिल जाएगी···दो एक नौकरियां उनकी नजर में हैं।

'अब तो मकान तैयार हो जाने के बाद ही नौकरी कीजिएगा।' मांजी ने उनसे कहा।

'और इतने दिन बेकार बैठा रहूं।' पिताजी झुंझलाकर मां से बोले, 'ताकि गांठ के पैसे भी खा लूं।'

जितने पैसे आप किसी दूसरी नौकरी में कमा लेंगे उससे अधिक तो आपके पिताजी के लाड़ले मजदूर खा लेंगे।'

'क्या मतलब ?'.

उत्तर में मां ने विनोद द्वारा बताई सारी बात उन्हें सुना दी···और पिताजी ने फैसला कर लिया कि मकान पूरा करवाने के बाद ही दूसरी नौकरी के लिए कहीं हाथ-पांव मारे जायें—पिताजी की देख-रेख में भवन-निर्माण का कार्य तेजी से होने लगा। मकान शानदार बन रहा था इसलिए रुपया अधिक लग रहा था···सारा जोड़ा हुआ धन समाप्त हो गया··· फिर पहली नौकरी से मिला फंड भी समाप्त हो गया और मकान में अभी लगभग तीन महीने का और काम शेष था···वर्ष-भर से विनोद के पिता जी घर बैठे हुए थे···खाना और घर का खर्चा भी इसी में चलता था···मकान के लिए उन्हें और दो हजार रुपये की आवश्यकता थी।

बातचीत विनोद के सामने हो रही थी···वह सोच रहा था कि अगर पिता जी के एक हजार रुपये न चुरा लिए जाते तो आज इस परेशानी का सामना क्यों करना

शेष पृष्ठ ४० पर

मदहोश



परिणाम

अंक नम्बर ९ में प्रकाशित प्रतियोगिताओं के परिणाम

पात्रों के नाम सुझाइये

नाम : आधो, माधो

विजेता : करनेश कुमार कवात्रा
लुधियाना, पंजाब

होली हास्य कविता :

होली को पी गये वे, पूरी छः लोटा भंग
पीते ही ऐसी चढ़ी, हुआ हाल बे ढंग
ले पिचकारी हाथ में, चले खेलने रंग
मिस उटनी को लिया, उसने अपने संग
दोनों मिल करने लगे. राहगीरों को तंग
जो भी मिलता राह में, करें गीले सबके अंग

विजेता :—लक्ष्मी प्रसाद साहू
जबलपुर (मध्य प्रदेश)

अंक नम्बर : १० में प्रकाशित वर्ग पहेली का हल

विजेता : कु० ममता पान्डे
सतना (म० प्र०)
(निर्णय लाटरी द्वारा)

कि	लो	मी	ट	र
त		र	म	ई
ना	टि	का		स
	क	सि		जा
ब	ना	म	ली	दा

अंक नम्बर ११ में प्रकाशित गुमनाम का हल .

गुमनाम : "जीनत अमान"

दीवानी बात :—

"खामोश रह के देखा भी हमने तो नजारा"
"सत्यमं शिवमं सुन्दरमं ने बुरी तरह मारा"

विजेता :—सतीश कसेरा
अबोहर (पंजाब)

चना कुरमुरा

● एक मित्र—'यार, मेरी बीबी पैसों के लिये मेरा भेजा खा जायेगी।'

दूसरा—'तुम बीबी को भेजा खा जाने देना लेकिन पैसे मत देना। आजकल बगैर भेजे के काम चले जाता है लेकिन बगैर पैसे के नहीं।'

● नशाबन्दी वालों को एक नब्बे वर्षीय व्यक्ति मिला जिसने कभी शराब को हाथ नहीं लगाया था। नशाबन्दी कार्य कर्त्ता उसके घर गये और प्रचार के लिये एक संदेश पर उनके हस्ताक्षर मांगे। संदेश में कहा गया था कि उनकी लम्बी आयु का राज शराब से दूर रहना ही था। उन्होंने हस्ताक्षर खुशी-खुशी कर दिये। तभी पास के कमरे से जोर से बोलने और उठा पटक की आवाज आई। कार्यकर्त्ताओं ने पूछा कि यह शोर कैसा है।

उत्तर मिला, 'मेरे पिता जी होंगे ! लगता उन्होंने आज फिर जी भर कर पी है।'

पृष्ठ ३८ से आगे

पड़ता···इस बात की विनोद को भी इतनी ही चिन्ता थी जितनी चिन्ता उसकी मां और पिताजी को थी···अब वह निरा बालक नहीं रहा था···दुनियादारी की बहुत-सी बातें समझता था।

लेकिन यह समस्या जल्दी हल हो गई···दादा जी के एक बनिए दोस्त ने हजार रुपया ब्याज पर देना स्वीकार कर लिया था···रुपया आ गया और काम आरम्भ हो गया···विनोद को लगा कि उसके मन से एक भार हल्का हो गया है लेकिन ब्याज का नाम सुनकर उसे बड़ा डर-सा लगा था···वह अब पांचवीं कक्षा में पढ़ता था और मूलधन, ब्याज दर तथा समय के प्रश्न उसने निकाले थे··फिर कुछ दिन बाद उसके मन से ब्याज की चिन्ता भी निकल गई क्योंकि उसने मां और पिताजी को बहुत खुश देखा था···उसने यह भी सुना था कि पिताजी को नौकरी भी मिल रही है···पिताजी और मां की खुशी उसकी खुशी थी···जब वह खुश थे तो वह संतुष्ट हो गया···और मन में संतोष होते ही उसे फूलवती की याद आने लगी—फूलवती जो लगभग डेढ़ वर्ष से उनके घर नहीं आई थी और न विनोद को ही फूलवती के घर जाने का अवसर मिला···उसके साथ न जा सकने का मुख्य कारण तो यह था कि दादाजी को मकान बनवाने से अवकाश नहीं था और वह केवल उन्हीं के साथ जा सकता था···मां ने भी इस बीच फूलवती को एक बार नहीं बुलाया था··· विनोद ने मां से कहा भी था किन्तु मां ने यह कहकर टाल दिया था कि अब वह अकेली नहीं आ सकेगी···वह बड़ी हो गई है।'

तीन महीने बाद मकान पूरा बन गया और वह लोग किराए के मकान से उठकर निजी मकान में आ गए···मां ने 'गृह-प्रवेश' पार्टी का आयोजन करके सब मुहल्ले वालों को बुलाकर चाय पिलाई···सबसे परिचय भी हुआ।

विनोद के लिए एक खुशी की बात और भी थी···नया मकान पाने के साथ विनोद ने एक छोटा-सा भैया भी पाया था···उसका कमल भैया जो बहुत भाग्यवान सिद्ध हुआ था।

वह घटना भी बड़ी अनोखी थी।

उन दिनों विनोद अंग्रेजी स्कूल में नौवीं कक्षा में पढ़ता था···वह अपने सहपाठी सुरेन्द्र के साथ स्कूल से लौट रहा था···दोनों दोस्त गप्प शप्प करते आ रहे थे···सर्दियों के दिन थे लेकिन दोपहर का समय होने से अधिक ठंड नहीं लग रही थी···गली के मोड़ पर अचानक उन्होंने एक लड़की को देखा जो एक मामूली-सी सफेद साड़ी और कश्मीर का हरा छोटा कोट पहने चप्पलें घिसटती चली आ रही थी···उसमें सबसे अजीब बात यह थी कि लड़की का चलने का ढंग बिल्कुल लड़कों-जैसा था···उसमें झिझक का संकेत तक नहीं था।

थोड़ा और निकट आने पर विनोद ने ध्यान से देखा तो इस लड़की के चेहरे में भी कुछ ऐसी विशेषतायें दिखाई दीं जो साधारण लड़कियों में उसने नहीं देखी थीं। लड़की के चेहरे पर तीखापन था और चेहरे की बनावट में एक गम्भीरता थी लेकिन उसकी आंखों में स्वाभाविक और आत्म-विश्वास था···उसकी चाल में एक विशेष शान थी—लड़की उनके समीप आ गई लेकिन ऐसा मालूम होता था जैसे उसे बिल्कुल एहसास न हो कि उसके पास से कोई गुजर रहा है। सुरेन्द्र की आदत थी कि जहां उसे कोई लड़की दिखाई दी उसकी जबान में खुजली उठने लगती···इस बार भी ऐसा ही हुआ और सुरेन्द्र अपनी जबान पर नियंत्रण न रख सका···उसने वाक्य कम ही दिया।

'अबे···हट इधर आ' उसने विनोद को अपनी ओर खींचते हुए कहा, 'सींग मार देगी···सींग।'

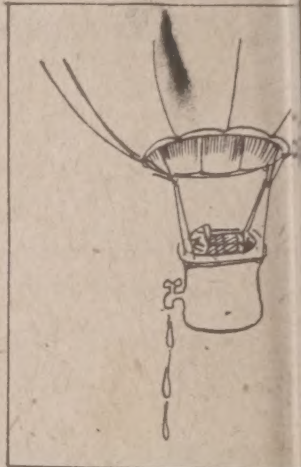
अचानक लड़की चौंककर रुक गई···ढंग ऐसा था जैसे सोते-सोते जाग उठी हो। उसने सुरेन्द का रास्ता रोक लिया और सुरेन्द्र को आगे बढ़ने का साहस नहीं हो सका—वह सीधा सुरेन्द्र की आंखों में देख रही थी···विनोद भी घबरा गया···और दूसरे ही क्षण तड़ाक से सुरेन्द्र के गाल पर एक थप्पड़ पड़ा।

'घर में बहन नहीं है शायद।' लड़की ने तीखे स्वर में कहा और फिर लापरवाही से आगे बढ़ गई।

विनोद और सुरेन्द्र कुछ क्षण के लिए भौंचक्का से खड़े रह गए··· समय तक लड़की को देखना वह गली के मोड़ पर घू ओझल नहीं हो गई···उसकी निराली शान थी।

बड़े जोर से मार ग गाल सहलाते हुए कहा।

विनोद चौंककर सुरेन्द्र फिर हंसकर बोला—



तारी
राजेन्द्र चंच

प्रेमी प्रेमिका बैठे हुए
सुख सपनों में खोये ह
प्रेमी बोला—
'प्रिये !
तुम्हारी बातें
रसमलाई
तुम्हारी आंखें
गुलाब जामुन
तुम्हारे गाल
बूंदो के लड्डू
तुम्हारे होंठ
मावे की बर्फी
तुम्हारी कसम
मैं कितना भाग्यवान ह
प्रेमिका ने तभी कहा—
'अरे तो सीधे कह दो
कि मैं—
'हलवाई की दुकान हूं



नाहर, २१६/१४, र, २० वर्ष, गीत लिखना, प्यार से दीवाना पढ़ना, फुट- र ।



नासीर मुगल, मोहल्ला कुचील-पुरा गवर्नर, रोड, बीकानेर (राज०), १८ वर्ष, पत्रिकायें पढ़ना, दीवाना पढ़ना, कविता लिखना, तोहफा भेजना।



राजेन्द्र कुमार नेवर, बी० एस० सी०, द्वारा करनी दान जी नंवर, पेकार सर कुआ, बीकानेर, १८ वर्ष, विज्ञान की पत्रिकायें पढ़ना।



बलराम 'रामनानी', रामनानी सॉ मिल्स, विनोदपुर, कटिहार, १८ वर्ष, डाक्टर बनना, हॉकी खेलना, दोस्ती करना, पत्र-मित्रता करना।



मोहम्मद इकबाल मुगल, द्वारा मुगल मंजिल कूचीलपुरा, बीकानेर, (राज०), १८ वर्ष, पत्र-मित्रता, फिल्में देखना, नये स्थान देखना।



सुनील कुमार जोशी, नेपाली स्टेशन रक्सौल, १६ वर्ष, हंसना और हंसाना, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता करना, डाक भेजना।



राजेन्द्र मल्होत्रा, १३/६, राम नगर करनाल, १७ वर्ष, पेंटिंग करना, दीवाना पढ़ना, रेडियो सुनना और भी मनोरंजक पुस्तकें पढ़ना।



चार्य, सिन्धी कालेज आई० कॉम० प्रथम , २० वर्ष, क्रिकेट फिल्म देखना, ह ना।



आनन्द नानकानी, ८२/२, देवी अहिल्या मार्ग, रोजगार दफ्तर के सामने, इन्दौर, २२ वर्ष, पत्र-मित्रता, लेखन अभिनय करना, डाक भेजना।



संजय राज वर्मा, राज विराज, (सपत्री चाल), खंसाल टोल, १५ वर्ष, छोटे बच्चों से प्यार बोलना, हवा में टहलना, लहरों में कूदना।



राजू शाही वसान टोल, माख: गली, काठमाण्डो (नेपाल), १७ वर्ष, पत्र-मित्रता, टिकट संग्रह करना, दोस्तों के साथ अच्छे काम करना।



विजय कुमार बिसानी, द्वारा श्री अमृतलाल बिसानी, उपायुक्त उपनिवेशन, पुनर्वास विभाग, सागर रोड, बीकानेर (राज०), १५ वर्ष,।



अजय गुप्ता, विजय निवास, हांसी रोड भिवानी, (हरियाणा), १५ वर्ष, डाक टिकट संग्रह, फोटो ग्राफी करना, फिल्में देखना।



अशोक कुमार, 'कुमार' ५३० अम्बे निवास स्कीम नं० २, अलवर (राज०), २० वर्ष, रिकार्ड सुनना, पुस्तकें पढ़ना, फरमाईश भेजना।



मारू, मिरझानेम ० नं० २२/६०३ १७ वर्ष, कहानियां गजीन पढ़ना, रेल रना।



राजकुमार माखीजा, स्टेण्डर्ड वाच कं०, गणेश मार्किट रायपुर (म० प्र०), २० वर्ष, पत्र मित्रता करना, दोस्ती बढ़ाना, पतंग उड़ाना।



अखिलेश श्रीवास्तव, 'चमन' स्थायी ग्राम, पो० मनियर, जिला बलिया, (उ० प्र०), २० वर्ष, कविता पढ़ना, लेख लिखना, पढ़ना।



प्रमोद कुमार सक्सैना, सी०/१०, आलोक नगर, जयपुर, हाउस आगरा, १५ वर्ष, क्रिकेट खेलना, कमेंट्री सुनना रेडियो सुनना।



रविन्द्र नाथ मिश्रा, द्वारा राजेन्द्र मिश्रा, पान्टी फार्म, प्रतापगढ़, १६ वर्ष, गाय चराना बड़ों की सेवा करना, हवा में टहलना।



देवीदास शेटे, 'दास निवास' टिलक पथ, औरंगबाद, १८ वर्ष, पत्र मैत्री करना, क्रिकेट खेलना तथा उपन्यास पढ़ना, फिल्म देखना।



सुनील कुमार फरवाहा, पो० दुलियाजान, जि० डिब्रूगढ़ (असम), मकान नं० (सी० टाइप-६०), १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना।



डब्लू. आई., जैड नलराय, १० वर्ष, ना, किताबें पढ़ना, ना, आपसी झगड़ों



विनोद अरोड़ा, कमरा नं० १२, जूनियर बाइज होस्टल, गवर्नमेन्ट मेडीकल कालेज पटियाला, २० वर्ष, सिक्के और टिकट संग्रह करना।



मनोज कुमार सिहल, कमरा नं० (३६), अमीन होस्टल अलीगढ़, मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, १६ वर्ष, खेलना, गाने सुनना।



इन्द्रजीत सिंह, ११६/५२७, फजल गंज चौगाहा कानपुर, (उ० प्र०), १८ वर्ष, गल्पियों के साथ दोस्ती करना, गप्प मारना।



जोगिन्द्र शांडिल्य, एन० एच० २६३ नीला महल जालन्धर शहर, (पंजाब), १४ वर्ष, कार्टून बनाना, भाषण देना, पत्र डालना।



रमेश कुमार १३/४१, शाहगंज चारबाग आगरा, १७ वर्ष, मोटर-साईकिल चलाना, गाने सुनना, फिल्म देखना दीवाना पढ़ना, तार भेजना।



विजय कुमार श्रीवास्तव, मनई टाड रोड, धनबाद, बिहार, १३ वर्ष, पेंटिंग करना, क्रिकेट खेलना, पढ़ना, पत्र-मित्रता करना।



मार, मालवीया लीछे, यूनिवर्सिटी वर्ष, डाक टिकट ना, तेज दौड़ना, र करना।



आदेश कुमार जैन, चन्द्रपुरी, १०६ गाजियाबाद, १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना, फरमाईश भेजना, दीवाना पढ़ना, पत्र लिखना, रेडियो सुनना।



राजेश शर्मा, ८३०, प्रेम नगर, स्ट्रीट नं० ५, यमुना नगर, १८ वर्ष, आपसी झगड़ों से बचना चाहिए, मेहनत करके पढ़ना चाहिए।



नरेन्द्र कुमार मकान नं० २५ बी० ..., टाउन शिप, ... वर्ष, दीवाना पढ़ना, यात्रा ..., काम करने में मन लगाना।



बनलाल फेला टुईख्वाहलंग, ऐजवाल, मिजोरम, १६ वर्ष, पढ़ना, खेलना, गाना, दीवाना पत्रों के उत्तर देना और पत्र-मित्रता करना।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। लिफाफे के कोने पर 'फ्रेंड्स' लिखना व फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना ८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

बाजार, दिल्ली में तेज प्रइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

तर्क-कुतर्क

तर्क—मैंने दांत निकलवा दिया ।

कुतर्क—उसकी जगह नया दांत रख लिया ।

तर्क—चीजों के दाम बढ़ गये हैं ।

कुतर्क—हम नाचीजों पर कोई असर नहीं होगा ।

तर्क—स्कूल बन्द है ।

कुतर्क—कौन सी जेल में ?

तर्क—मैंने मकान किराये पर चढ़ा दिया तो बीवी लड़ रही है ।

कुतर्क—बीवी मकान को रेल या बस में चढ़ाना चाहती थी ?

तर्क—मेरा सिर भारी हो रहा है ।

कुतर्क—कुली से उठवा लो ।

तर्क—मेरा गला सूख रहा है ।

कुतर्क—धोया होगा ।

तर्क—सफारिश लड़ा रहा हूं ।

कुतर्क—मुर्गे और कबूतर लड़ाने का जमाना थोड़े ही रह गया है ।

तर्क—मेरा दिल बैठ रहा है ।

कुतर्क—बैठने दो ! खड़े होकर ही कौन सा इलैक्शन जीतेगा ।

तर्क—मैंने चार दिन से कुछ नहीं खाया ।

कुतर्क— डाक्टर ने केवल रात को खानें के लिये कहा है तुम्हें ?

तर्क-मेरा टी० वी० खराब है ।

कुतर्क— तुम ही कौन से अच्छे हो ?

तर्क-मेरी जेब खाली है ।

कुतर्क— टुलेट की तख्ती लगा लो ।

तर्क-हम दोनों की आंखें चार हुयीं ।

कुतर्क— पांच हुयी होतीं तो ही कौन सा तूफान आ जाता ।

तर्क-मेरा भगवान में विश्वास नहीं हैं ।

कुतर्क— वह कौन सा तुमसे उधार मांगने आयेगा ?

आप भी इस स्तंभ के लिये तर्क-कुतर्क भेजिये ।

और भं। **तर्क-कुतर्क**
विनोद ने ए..दीवाना साप्ताहिक
...उसका कमल..दादुरशाह जफर मार्ग,
सिद्ध हुआ था । ..ली-११०००२

नशाबन्दी के दौर में बढ़ता हुआ नशीला नाम

एल० एस० डी० गर्ल

जीनत अमान

विजय भारद्वाज

जीनत अमान की फिल्म 'ग्रेट गैम्बलर' पिछले दिनों प्रदर्शित हुई । इस फिल्म में जीनत अमान ने 'वैम्पिश' भूमिका निभा कर अपने अभिनय का सुदृढ़ सबूत पेश किया है । मॉडलिंग से एक्टिंग तक जीनत अमान का सुहाना सफर आज दर्शकों के दिलो दिमाग पर छा गया है ।

आज जीनत अमान अपने रूप सौंदर्य और अभिनय के बल पर सफलता प्राप्त कर रही हैं और फिल्म उद्योग की 'नम्बर वन' हीरोइन हेमा मालिनी के लिये एक चुनौती बन गई हैं । जीनत अमान ने अपनी लगन और अभिनय क्षमता के बल पर ही इतना ऊंचा स्थान प्राप्त किया है । दिन-प्रतिदिन जीनत का रंग रूप और अभिनय निखरता चला जा रहा है । हंगामा, हलचल, हरे रामा हरे कृष्णा, रोटी कपड़ा और मकान, प्रो० प्यारेलाल, सत्यम् शिवम् सुन्दरम्, डान, आदि फिल्मों से उपरोक्त बात साबित होती है ।

जीनत अमान की सबसे बड़ी विशेषता जिसके कारण लोग इन्हें स्वार्थी कहते हैं वह यह है कि यह गुटबन्दी में विश्वास नहीं रखतीं । यह किसी भी व्यक्ति विशेष के साथ पक्षपात नहीं करतीं और न ही किसी विशेष फिल्मी सितारे के साथ अपनी जोड़ी बनानें की सोचती हैं ।

जीनत अमान की मम्मी श्रीमती हैन्ज का कहना है । हमारा जीनी अपना मन मर्जी करता है, लेकिन जीनी फिल्म की कहानी अपन से (श्रीमती हैन्ज) पढ़ कर ओ. के. करवाता है । अगर अपन कहानी नापसन्द कर देता है तो जीनी बेबी उस फिल्म में काम नहीं करती ।

जीनत अमान की मम्मी के उपरोक्त बयान से साफ जाहिर होता है कि जीनत अमान के बिजनेस की देखभाल उनकी मम्मी ही करती हैं, दूसरी मम्मियों की तरह । बालिग होने पर भी कुछ ऐसी अभिनेत्रियां और भी हैं जो स्वयं अपनी मर्जी से फिल्म साइन नहीं करतीं । हेमा, रेखा, नीतू, रीना का नाम इनमें उल्लेखनीय है ।



देव आनन्द ने जीनत अमान की जम कर पब्लिसिटी की और इन्हें रातों रात दर्शकों के दिलों में बिठा दिया । 'दम मारो दम गर्ल' के रूप में देव आनन्द ने जीनत अमान को 'हरे रामा हरे कृष्णा' में पेश किया । फिल्म प्रदर्शन के बाद दर्शकों को वास्तव में जीनत में दम लगा और यह 'दम मारो दम गर्ल' दर्शकों के दिमाग पर नशा सा बन कर छा गई ।

फिल्मी अंचलों में कुछ लोग तो जीनत अमान को 'एल० एस० डी० गर्ल' के नाम से पुकारने लगे ।

लेकिन जब राजकपूर ने जीनत के आगे अपने सपनों की कहानी सुनाई और बताया कि उसकी 'रूपा' जीनत ही हो सकती है, तो जीनत ने सहर्ष स्वीकार कर लिया और इस प्रकार जीनत अमान फिल्म 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' की नायिका बन गईं । देव आनन्द कैम्प को छोड़ कर वह आर. के. कैम्प में दाखिल हो गईं । देव आनन्द के साथ जीनत अमान के तमाम रोमांसों की खबरों का खण्डन हो गया और फिर नाम जुड़ा राजकपूर का ।

और अब जीनत अमान सभी निर्माताओं को एक पक्ष होकर देखती हैं और फिल्में साइन करती हैं । उनका कहना है, देव आनन्द बहुत अच्छे इन्सान हैं । मैं उनकी इज्जत करती हूं लेकिन बाकी निर्माताओं को भी मैं नजरअन्दाज नहीं कर सकती ।